ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

छमाही हिंदी गृह पत्रिका

ऑयल किरण

अइल किৰण OIL KIRAN | 2022 | वर्ष 19 अंक 31 |

हास्य कवि सम्मेलन

पत्रिका प्रबंधकीय मंडल

मुख्य संरक्षक

श्री प्रशांत बोरकाकोती
आवासी मुख्य कार्यपालक
ऑयल, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

संरक्षक

श्री पलाश गोगोई
मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन)
ऑयल, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

श्री अरूणज्योति बरुवा
मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन - क्षेत्र प्रशासन)
ऑयल, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

श्री देवाशीष बोरा
महाप्रबंधक (जन संपर्क)
ऑयल, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

संपादक

श्री दिगंत डेका
अधिकारी (राजभाषा)
ऑयल, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

संपादक मंडल

डॉ. रमणजी झा
महाप्रबंधक (राजभाषा)
ऑयल, निगमित कार्यालय, नोएडा

डॉ. विजय मोहन बरेजा
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
ऑयल, कोलकाता कार्यालय, कोलकाता

श्री हरेकृष्ण बर्मन
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
ऑयल, पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी

डॉ. शैलेश त्रिपाठी
प्रबंधक (राजभाषा)
ऑयल, राजस्थान क्षेत्र, जोधपुर

संपादन सहयोग

श्री दीपक प्रसाद
पर्यवेक्षण सहायक (ईजी-IV)
ऑयल, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

श्री विजय कुमार गुप्ता
पर्यवेक्षण सहायक (ईजी-I)पीजी
ऑयल, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

संपादकीय कार्यालय :
राजभाषा अनुभाग, जन संपर्क विभाग
ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय
डाकघर : दुलियाजान – 786602, जिला : डिब्रूगढ़ (असम)
ई-मेल : hindi_section@oilindia.in

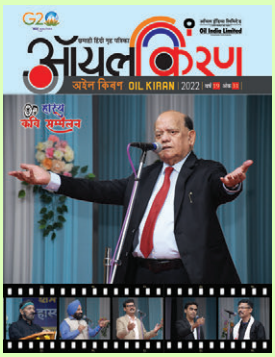

ऑयल किरण
वर्ष-19, अंक-31

आवरण-विषय
हास्य कवि सम्मेलन 2022

इस अंक में...

मदद	8
समाज के नवनिर्माण में साहित्य की भूमिका	9
पीएसयू का निजीकरण और भारत पर इसका प्रभाव	11
कोमल चावल / चकोवा चावल / बोका चावल - THE REAL FAST FOOD	14
भ्रष्टाचार-मुक्त भारत विकसित भारत	15
प्रेम विस्तार है और स्वार्थ संकुचन	16
गरीबी केवल धन की कमी नहीं है	17
"चकोर" : आत्मरक्षा जुर्म नहीं	18
जलवायु परिवर्तन : अनुकूल से प्रतिकूल	23
महाभारत कैसे बना	25
वह सब जो छूट गया	26
कैसे कहूँ ...?	26
तजुर्बा ...	27
बादल	27
मैं एक औरत हूँ	27
एक सैनिक का परिवार	28
मिर्ची	28
ऑयल राजभाषा समाचार	29-43

पत्रिका में प्रकाशित लेखों, रचनाओं आदि में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। ऑयल राजभाषा अनुभाग तथा सम्पादक का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

नि:शुल्क एवं आंतरिक विरतण हेतु प्रकाशित।

मुद्रक - दुलियाजान प्रिन्टिग वर्क्स, दुलियाजान, दूरभाष - 94350 38552

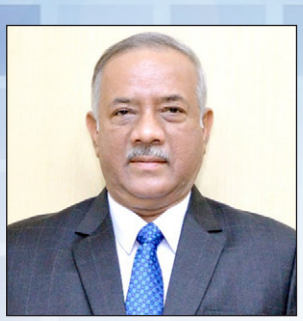

श्री प्रशांत बोरकाकोती

ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

आवासी मुख्य कार्यपालक
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
ऑयल इंडिया लिमिटेड

शुभकामना संदेश

हमारी कंपनी की पूर्णरूपेण हिन्दी भाषा में प्रकाशित होने वाली एकमात्र गृह-पत्रिका 'ऑयल किरण' के नवीनतम वर्ष 19, अंक 31 के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष हो रहा है।

मानव जीवन में भाषा का अत्यंत महत्व है। मनुष्य के पास भाषा एक ऐसी शक्ति, एक ऐसे सशक्त माध्यम के रूप में विद्यमान है जिसके द्वारा वह बोलकर, सुनकर, लिखकर या पढ़कर अपने मन के भावों या विचारों का आदान-प्रदान कर सकता है। स्वभाषा के विकास से ही मनुष्य का विकास संभव है। हिन्दी भाषा भारत की सर्वाधिक प्रयुक्त भाषा होने के कारण राजभाषा के पद पर सुशोभित है। हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार और विकास को और अधिक बढ़ावा देने के लिए देश की अन्य सभी भाषाओं के वे शब्द जो जनता के बीच आम प्रचलन में हैं, उन्हें हमें ज्यों का त्यों अपना लेना चाहिए। इससे भाषा और मजबूत तथा लोकप्रिय बनेगी। भाषा को जितना हो सके सरल व सुबोध बनाने की कोशिश करनी चाहिए ताकि आम जनता उसे आसानी से समझ सके, जिससे उनका झुकाव हिन्दी भाषा की ओर अधिक बढ़े। कार्मिकों से मेरा अनुरोध है कि जितना हो सके कार्यालय में अपने अधिक-से-अधिक कार्य सरल व सुबोध हिंदी भाषा में करने का प्रयास करें ताकि औरों को भी समझ में आए जिसके फलस्वरूप राजभाषा हिंदी की ओर उनका रुझान बढ़े।

'ऑयल किरण' के संपादक मंडल, लेखक और उसके प्रकाशन कार्य से जुड़े सभी लोगों को मैं बधाई देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि यह अंक आप सभी के लिए सार्थक और उपयोगी सिद्ध होगा।

सस्नेह,

प्रशांत बोरकाकोती

(प्रशांत बोरकाकोती)

श्री पलाश गोगोई

ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान,
ऑयल इंडिया लिमिटेड

शुभकामना संदेश

ऑयल द्वारा प्रकाशित होने वाली कार्यालयीन पत्रिका 'ऑयल किरण', जो हिंदी में प्रकाशित की जाती है, के नवीनतम वर्ष 19, अंक 31 को आप सभी सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष एवं गर्व का अनुभव हो रहा है।

ऑयल इंडिया लिमिटेड अपने निर्धारित कार्य के साथ-साथ राजभाषा के कार्यान्वयन व प्रचार-प्रसार को सुनिश्चित करने की दिशा में हमेशा तत्पर रहती है। राजभाषा हिन्दी के प्रयोग की निरंतर वृद्धि सुनिश्चित करने हेतु कार्मिकों को हिन्दी प्रशिक्षण, विभिन्न प्रोत्साहन योजना के तहत एकमुश्त राशि का भुगतान तथा उत्कृष्ट कार्य करने वाले विभागों को राजभाषा शील्ड प्रदान किया जाता है। इतना ही नहीं हमारी कंपनी नराकास, दुलियाजान की अध्यक्षता करते हुए सदस्य कार्यालयों के कार्मिकगणों को हिन्दी प्रशिक्षण, राजभाषा उत्सव के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लेने का मौका, 'ऑयल किरण' में रचनाएं प्रकाशित करने का अवसर तथा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले सदस्य कार्यालयों को भी ऑयल नराकास राजभाषा शील्ड प्रदान किया जाता है। कार्मिकों को राष्ट्र हित में यथासंभव अपने कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी भाषा का प्रयोग अधिक से अधिक करने का प्रयास करना चाहिए।

मैं संपादक मंडल को बधाई देता हूं जिनके अथक प्रयासों से यह पत्रिका जीवंत है। 'ऑयल किरण' हर वर्ष इसी भांति पाठकों तक पहुंचती रहे, यही मेरी हार्दिक आकांक्षा है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

पलाश गोगोई

(पलाश गोगोई)

श्री अरुणज्योति बरूवा

ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन - क्षेत्र प्रशासन)
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान,
ऑयल इंडिया लिमिटेड

शुभकामना संदेश

हमारी कंपनी की गृह पत्रिका 'ऑयल किरण' के नवीनतम वर्ष 19, अंक 31 का प्रकाशन व्यक्तिगत रूप से मेरे और पूरी कंपनी के लिए अत्यंत गर्व का विषय है।

हमारी कंपनी द्वारा हिंदी की गृह पत्रिका का प्रकाशन किया जाना इस बात का द्योतक है कि हमारे कार्मिकगण हिन्दी भाषा में कार्य करने के प्रति पूर्ण समर्पित हैं। हमारी कंपनी "ग" क्षेत्र में स्थित होने के बावजूद यहाँ यथासंभव कार्य हिन्दी में किए जाते हैं। इसके साथ ही राजभाषा संबंधी सभी नियमों का भी पूर्ण रूप से पालन किया जाता है। अतएव हमारा संवैधानिक तथा नैतिक कर्तव्य बनता है कि अपने कार्यालय में अधिक से अधिक कार्य करने में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग करें।

मेरा विश्वास है कि "ऑयल किरण" का यह अंक राजभाषा के प्रचार-प्रसार तथा उसके कार्यान्वयन में सहायक सिद्ध होगा। पाठकगण अपने सुझावों एवं विचारों से हमारा मार्गदर्शन अवश्य करें जिससे पत्रिका के आगामी अंक को और बेहतर बनाया जा सके।

शुभकामनाओं सहित,

3/2/21

(अरुणज्योति बरूवा)

श्री देवाशीष बोरा

ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

महाप्रबंधक (जन संपर्क) विभागाध्यक्ष
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
ऑयल इंडिया लिमिटेड

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि कंपनी की अर्धवार्षिक गृह पत्रिका "ऑयल किरण" वर्ष 19, अंक 31 का प्रकाशन किया जा रहा है।

हमारे यहां से "ऑयल किरण" गृह पत्रिका का निरंतर प्रकाशन स्वयं में ही इसकी सफलता को परिलक्षित कराता है। हिन्दी गृह पत्रिका का प्रकाशन करना, भारत सरकार की राजभाषा नीति के प्रचार-प्रसार की दिशा में एक महत्वपूर्ण एवं सराहनीय कदम है। इसके माध्यम से कार्मिकों और उनके आश्रितों के मध्य हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार करने का प्रयास किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में हमारी कंपनी लगातार सकारात्मक कदम उठाती रहती है। राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने में हिंदी पत्रिका का योगदान अद्वितीय है। मैं इस पत्रिका के संपादक मंडल, रचनाकारों तथा प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहयोग करने वालों को हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

हार्दिक अभिनंदन सहित,

डी. बोरा

(देवाशीष बोरा)

श्री दिगंत डेका

सम्पादकीय

हमारी कंपनी की गृह पत्रिका 'ऑयल किरण' का नवीनतम वर्ष 19, अंक 31 आप सभी के समक्ष सौंपते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। 'ऑयल किरण' हमारी कंपनी की गृह पत्रिका ही नहीं, अपितु हमारी पहचान बन चुकी है। आपके साथ यह जानकारी साझा करते हुए मुझे गर्व का अनुभव हो रहा है कि 'ऑयल किरण' ने सफलतापूर्वक दो दशकों से भी ज्यादा की लंबी यात्रा पूरी कर चुकी है। शुरुआत में पहले यह पत्रिका स्मारिका के तौर पर थी, फिर इसे वार्षिक रूप में प्रकाशित किया गया। वर्ष दर वर्ष 'ऑयल किरण' की बढ़ती लोकप्रियता व इससे जुड़ने वाले रचनाकारों व लेखकों की रुचि में बढ़ोत्तरी को मद्देनज़र रखते हुए इसे अर्धवार्षिक यानी वर्ष में दो अंकों के रूप में प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया। वास्तव में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में कार्यालयीन पत्रिकाएं अहम भूमिकाएं निभाती हैं।

भाषायी विविधता एवं बहुभाषायी संस्कृति के बावजूद राजभाषा हिन्दी ने देश के स्वतंत्रता आन्दोलन से लेकर आजतक पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोकर रखा है। आज हमारे देश के लगभग सभी क्षेत्रों में हिंदी भाषा को राजभाषा, संपर्कभाषा एवं भावनात्मक स्तर पर राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकारा जा चुका है। हिन्दी भाषा अपने आप में परिपूर्ण है तथा दुनिया की विभिन्न भाषाओं के बीच अपना एक अलग स्थान बनाने की क्षमता रखती है। सच कहें तो हिन्दी में काम करना आसान है, बस आपको शुरु करने की देरी है।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा हिन्दी के प्रसार एवं विकास की गति बढ़ाने हेतु वार्षिक लक्ष्यों को निर्धारित करते हुए, प्रति वर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है। ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा इन वार्षिक लक्ष्यों को निर्धारित समय पर पूरा करने के लिए राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में विभिन्न स्तरों पर कार्य किया जाता है। हमें अपने कार्यालय में अधिक से अधिक हिन्दी में कार्य करने का प्रयास करना चाहिए जिससे दूसरे कार्मिकों को भी प्रेरणा मिलें, उनका झुकाव हिंदी की ओर और बढ़े। हमारी कंपनी "ग" क्षेत्र में होने के बावजूद हमारे कार्मिकगण राजभाषा हिंदी के प्रति समर्पित भाव से कार्य करते हैं जबकि यहां की मातृभाषा मूलतः असमिया है। इसी समर्पित भाव का सकारात्मक परिणाम हमारे समक्ष आया है कि माननीय संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप-समिति द्वारा दिनांक 21.09.2022 को ऑयल इंडिया लिमिटेड के क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान एवं पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी का गुवाहाटी में निरीक्षण किया गया, जिसमें संसदीय राजभाषा समिति के संयोजक तथा अन्य सदस्यों ने ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा राजभाषा के कार्यान्वयन की दिशा में किए गए प्रयासों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस उपलब्धि हेतु मैं समग्र ऑयल परिवार का अभिनंदन करता हूँ। अतएव मैं प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी से अनुरोध करता हूँ कि आप इसी तरह अपने कार्यालय तथा रोजमर्रा के कामकाजों में हिन्दी का प्रयोग अधिक से अधिक करें। हिन्दी में काम करना राष्ट्र सेवा करने के बराबर है।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका कार्यालय में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने में एक सशक्त और प्रभावी माध्यम बनेगी। इस पत्रिका से जुड़े सभी रचनाकारों का मैं आभार व्यक्त करता हूं और आप सभी को, मेरे और पूरे राजभाषा परिवार की तरफ से आपके बहुमूल्य योगदान हेतु धन्यवाद ज्ञापित करता हूं। आशा करता हूं कि भविष्य में भी इसी प्रकार से आपका समर्थन और सहयोग मिलता रहेगा।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

दिगंत

(दिगंत डेका)
अधिकारी (राजभाषा)
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

मदद

✍ **दीपांकर मल्ल बरुवा**
उप महाप्रबंधक (कूप संलेखन)
कूप संलेखन विभाग, दुलियाजान

जिस रात हम होटलों और कसीनों के शहर मकाऊ पहुंचे, वहां हमारी कोई पूर्व-व्यवस्थित गतिविधियां नहीं थीं। मकाऊ में कई बेहतरीन होटल हैं। मकाऊ दिन-रात कई होटलों के साथ अलग-अलग नामों से चमकता है- गैलेक्सी, विनीशियन, पेरिसियन। वे होटल पर्यटकों के लिए विभिन्न शो आयोजित करते हैं, यहां तक कि निःशुल्क भी। इन शो का मुख्य उद्देश्य पर्यटकों को होटलों के विशाल कैसिनो की ओर आकर्षित करना है। बड़े होटल एक ही क्षेत्र में एक साथ करीब हैं। वह क्षेत्र लास वेगास के अमेरिकी कैसीनो शहर जैसा है।

वह इलाका उस होटल से कुछ दूरी पर है जहां हम रुके थे। होटल के ठीक बगल में एक बस स्टॉप है। मैंने टैक्सी लेने के बजाय बस लेने का फैसला किया। इसमें कम पैसे खर्च होंगे और एक अलग अनुभव होगा। हमें बताया गया कि हम उस स्टॉप पर कुछ नंबर की बसें लेकर अपने गंतव्य तक पहुंच सकते हैं। हम होटल द्वारा हमें दिए गए बस नंबर के साथ कागज लेकर बस स्टॉप पर आए।

मकाऊ में विदेशी पर्यटकों के लिए एक मुख्य समस्या यह है कि स्थानीय लोग अंग्रेजी नहीं समझते हैं और न ही बोलते हैं। कैंटोनीज़, चीनी की एक बोली, वहां बोली जाती है जिसे समझना असंभव है। पर्यटन केन्द्रित शहर होने के बावजूद आम राहगीर, टैक्सी चालक और बस चालक अंग्रेजी नहीं बोलना चाहते। हमें फ़ेरी से होटल तक टैक्सी लेने में बहुत परेशानी हुई। जब हम अंग्रेजी बोलतें हैं तो टैक्सी चालक मुड़ना नहीं चाहता। अंत में, उनमें से एक को सहमत करने में हम कामयाब रहे।

हम बस स्टॉप पर रुके, लेकिन होटल से लेकर आए कागज़ पर लिखे नंबर वाली बस नहीं आई। कई बसें आईं और चली गईं। हमने कई लोगों से पूछा कि अन्य बसें क्या उपलब्ध थीं लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। अंत में, एक महिला हमारी मदद के लिए आगे आईं। वे अंग्रेजी जानती थीं। उन्होंने हमें समझाया कि स्टॉप पर विभिन्न बस नंबर कहां गए और हमें अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए कौन सी बस लेनी होगी।

जब एक निश्चित नंबर वाली बस आई, तो उन्होंने हमें उसमें सवार होने के लिए कहा। ड्राइवर के सामने के दरवाजे से बसों में सवार होना होता है। मैं उठा और ड्राइवर से अंग्रेजी में पूछा कि क्या बस गैलेक्सी होटल जा रही है। वह आदमी क्रोधित हो गया और हमें उतरने को कहा। महिला ने कहा कि हमें बस चालक से पूछने की जरूरत नहीं है। जब आप उनसे अंग्रेजी में पूछते हैं तो वे ऐसा ही व्यवहार करते हैं।

कई बसें आईं और चली गईं। महिला हमारे पास इंतजार कर रही थीं। मैंने उनसे बात की और पता चला कि वे फिलीपींस से आई है और वहां बेबी सिटर का काम करती हैं। उन्होंने कहा कि मकाऊ के स्थानीय लोग छोटे-मोटे काम नहीं करते हैं। इसलिए फिलीपींस से बहुत से लोग छोटे-मोटे काम करने के लिए मकाऊ आते हैं।

जब मैंने उन्हें हमारे साथ इंतज़ार करते देखा, तो मैंने पूछा, "आप कहाँ जा रही हैं? आपकी बस भी नहीं आई?"

उन्होंने कहा, "मेरा घर पास में है, बस दो पड़ाव दूर है। कई बसें मैं ले सकती थी। लेकिन मैं आपके बस के आने का इंतज़ार कर रही हूँ क्योंकि आप मुश्किल में पड़ेंगे। मैं आपको बस में उठाकर चली जाऊंगी।"

मेरा दिल उस महिला की ईमानदारी से भर गया। कभी-कभी आप ऐसे ईमानदार लोगों से अप्रत्याशित रूप से मिल जाते हैं। वे हमारी मदद करने के लिए हमारे साथ काफी देर तक इंतजार करती रहीं। बदले में हमारे पास उन्हें देने के लिए धन्यवाद के अलावा कुछ नहीं था।

अंत में, हम जिस बस में जा सकते थे, वह आ गई। हमने उन्हें धन्यवाद दिया और बस में चढ़ गए। उन्होंने हमें अलविदा कह दिया। बाद में मुझे एहसास हुआ कि मैं उस महिला से कभी नहीं मिलूंगा जिन्होंने हमारी इतनी मदद की थी। खेद तो यह रह गया कि उनसे उनका नाम तक नहीं पूछा गया। ❑

समाज के नवनिर्माण में साहित्य की भूमिका

✍ **अजय दास**
कनिष्ठ सहायक (लिपिक-सह-कंप्यूटर ऑपरेटर)
मानव संसाधन अधिग्रहण विभाग, दुलियाजान

"किसी का सत्य था,
मैंने संदर्भ में जोड़ दिया।
कोई मधुकोष काट लाया था,
मैंने निचोड़ लिया।
यूं मैं कवि हूँ, आधुनिक हूँ, नया हूँ
काव्य-तत्व की खोज में कहाँ नहीं गया हूँ?
चाहता हूँ आप मुझे
एक-एक शब्द पर सराहते हुए पढ़ें।
पर प्रतिमा- अरे, वह तो
जैसी आप को रुचे आप स्वयं गढ़े।"

उपर्युक्त पंक्तियाँ सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' की 'नया कवि', 'आत्मा-स्वीकार' से उद्धृत हैं। अज्ञेय ने रचना सृजन के दौरान की मनोस्थिति को बहुत ही सुंदर तरीके से यहाँ अभिव्यक्त किया है। साहित्य का आविर्भाव भी इसी समाज से होता है जिसे रचनाकार अपने भावों के साथ मिलाकर उसे एक आकार देता है। यही रचना समाज के नवनिर्माण में पथप्रदर्शक की भूमिका निभाने लगती है। अज्ञेय मानते हैं कि साहित्यकार होने के नाते अपने समाज के साथ उनका एक विशेष प्रकार का संबंध है- समाज से उनका आशय चाहे हिंदी भाषी समाज रहा हो जो कि उनका पहला पाठक होगा, चाहे भारतीय समाज जिसके काफी समय से संचित अनुभव को वे वाणी दे रहे होंगे, चाहे मानव समाज हो जो कि शब्द मात्र में अभिव्यक्त होने वाले मूल्यों की अंतिम कसौटी ही नहीं बल्कि उनका स्रोत भी है।

हम पाते हैं कि साहित्य वह सशक्त माध्यम है, जो समाज को व्यापक रूप से प्रभावित करता है। यह समाज में प्रबोधन की प्रक्रिया का सूत्रपात करता है। लोगों को प्रेरित करने का कार्य करता है और जहाँ एक ओर यह सत्य के सुखद परिणामों को रेखांकित करता है, वहीं असत्य का दुखद अंत कर सीख व शिक्षा प्रदान करता है। अच्छा साहित्य व्यक्ति और उसके चरित्र निर्माण में भी सहायक होता है। यही कारण है कि समाज के नवनिर्माण में साहित्य की केंद्रीय भूमिका होती है। इससे समाज को दिशा-बोध होता है और साथ ही उसका नवनिर्माण भी होता है। साहित्य समाज को संस्कारित करने के साथ-साथ जीवन मूल्यों की भी शिक्षा देता है एवं कालखंड की विसंगतियों, विद्रूपताओं एवं विरोधाभासों को रेखांकित कर समाज को संदेश प्रेषित करता है, जिससे समाज में सुधार आता है और सामाजिक विकास को गति मिलती है।

साहित्य में मूलत: तीन विशेषताएँ होती हैं जो इसके महत्त्व को रेखांकित करती हैं। उदाहरणस्वरूप साहित्य अतीत से प्रेरणा लेता है, वर्तमान को चित्रित करने का कार्य करता है और भविष्य का मार्गदर्शन करता है। साहित्य को समाज का दर्पण भी माना जाता है। हालाँकि जहाँ दर्पण मानवीय बाह्य विकृतियों और विशेषताओं का दर्शन कराता है वहीं साहित्य मानव की आंतरिक विकृतियों और खूबियों को चिह्नित करता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि साहित्यकार समाज में व्याप्त विकृतियों के निवारण हेतु अपेक्षित परिवर्तनों को भी साहित्य में स्थान देता है। साहित्यकार से जिन वृहत्तर अथवा गंभीर उत्तरदायित्वों की अपेक्षा रहती है उनका संबंध केवल व्यवस्था के स्थायित्व और व्यवस्था परिवर्तन के नियोजन से ही नहीं है, बल्कि उन आधारभूत मूल्यों से है जिनसे इनका निर्णय होता है कि वे वांछित दिशाएँ कौन-सी हैं, और जहाँ इच्छित परिणामों और हितों की टकराहट दिखाई पड़ती है, वहाँ पर मूल्यों का पदानुक्रम कैसे निर्धारित होता है?

समाज के नवनिर्माण में साहित्य की भूमिका के परीक्षण से पूर्व यह जानना आवश्यक है कि साहित्य का स्वरूप क्या है और उसके समाज दर्शन का लक्ष्य क्या है? **हितेन सह इति सष्टिमूह तस्याभाव: साहित्यम्।** यह वाक्य संस्कृत का एक प्रसिद्ध सूत्र-

वाक्य है जिसका अर्थ होता है साहित्य का मूल तत्व सबका हितसाधन है। मानव अपने मन में उठने वाले भावों को जब लेखनीबद्ध कर भाषा के माध्यम से प्रकट करने लगता है तो वह रचनात्मकता ज्ञानवर्धक अभिव्यक्ति के रूप में साहित्य कहलाती है। साहित्य का समाजदर्शन शूल-कंटों जैसी परंपराओं और व्यवस्था के शोषण रूप का समर्थन करने वाले धार्मिक नैतिक मूल्यों के बहिष्कार से भरा पड़ा है। जीवन और साहित्य की प्रेरणाएँ समान होती हैं। समाज और साहित्य में अन्योन्याश्रित संबंध होता है। साहित्य की पारदर्शिता समाज के नवनिर्माण में सहायक होती है जो खामियों को उजागर करने के साथ उनका समाधान भी प्रस्तुत करती है। समाज के यथार्थवादी चित्रण, समाज सुधार का चित्रण और समाज के प्रसंगों की जीवंत अभिव्यक्ति द्वारा साहित्य समाज के नवनिर्माण का कार्य करता है।

साहित्य समाज की उन्नति और विकास की आधारशिला रखता है। इस संदर्भ में अमीर खुसरो से लेकर तुलसी, कबीर, जायसी, रहीम, प्रेमचंद, भारतेन्दु, निराला, नागार्जुन तक की शृंखला के रचनाकारों ने समाज के नवनिर्माण में अभूतपूर्व योगदान दिया है। व्यक्तिगत हानि उठाकर भी उन्होंने शासकीय मान्यताओं के खिलाफ जाकर समाज के निर्माण हेतु कदम उठाए। कभी-कभी लेखक समाज के शोषित वर्ग के इतना करीब होता है कि उसके कष्टों को वह स्वयं भी अनुभव करने लगता है। तुलसी, कबीर, रैदास आदि ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों का समाजीकरण किया था जिसने आगे चलकर अविकसित वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में समाज में स्थान पाया। मुंशी प्रेमचंद के एक कथन को यहाँ उद्धृत करना उचित होगा, **''जो दलित है, पीड़ित है, संत्रस्त है, उसकी साहित्य के माध्यम से हिमायत करना साहित्यकार का नैतिक दायित्व है।''**

प्रेमचंद का किसान-मज़दूर चित्रण उस पीड़ा व संवेदना का प्रतिनिधित्व करता है जिनसे होकर आज भी अविकसित एवं शोषित वर्ग गुज़र रहा है। साहित्य में समाज की विविधता, जीवन-दृष्टि और लोककलाओं का संरक्षण होता है। साहित्य समाज को स्वस्थ कलात्मक ज्ञानवर्धक मनोरंजन प्रदान करता है जिससे सामाजिक संस्कारों का परिष्कार होता है। रचनाएँ समाज की धार्मिक भावना, भक्ति, समाजसेवा के माध्यम से मूल्यों के संदर्भ में मनुष्य हित की सर्वोच्चता का अनुसंधान करती हैं। यही दृष्टिकोण साहित्य को मनुष्य जीवन के लिए उपयोगी सिद्ध करते हैं।

साहित्य की सार्थकता इसी में है कि वह कितनी सूक्ष्मता और मानवीय संवेदना के साथ सामाजिक अवयवों को उद्घाटित करता है। साहित्य संस्कृति का संरक्षक और भविष्य का पथ-प्रदर्शक है। संस्कृति द्वारा संकलित होकर ही साहित्य 'लोकमंगल' की भावना से समन्वित होता है। सुमित्रानंदन पंत की पंक्तियाँ इस संदर्भ में कहती हैं कि-

"वही प्रज्ञा का सत्य स्वरूप
हृदय में प्रणय अपार
लोचनों में लावण्य अनूप
लोक सेवा में शिव अविकार।"

उन्नीसवीं एवं बीसवीं शताब्दी को भारतीय साहित्य के सांस्कृतिक एवं समाज निर्माण की शताब्दी कहा जा सकता है। इस शताब्दी ने स्वतंत्रता के साथ-साथ समाज सुधार को भी संघर्ष का विषय बनाया। इस काल के साहित्य ने समाज जागरण के लिये कभी अपनी पुरातन संस्कृति को निष्ठा के साथ स्मरण किया है, तो कभी तात्कालिक स्थितियों पर गहराई के साथ चिंता भी अभिव्यक्त की।

आठवें दशक के बाद से आज तक के काल का साहित्य जिसे वर्तमान साहित्य कहना अधिक उचित होगा, फिर से अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़कर समाज निर्माण की भूमिका को वरीयता के साथ पूरा करने में जुटा है। वर्तमान साहित्य मानव को श्रेष्ठ बनाने का संकल्प लेकर चला है। व्यापक मानवीय एवं राष्ट्रीय हित इसमें निहित हैं। हाल के दिनों में संचार साधनों के प्रसार और सोशल मीडिया के माध्यम से साहित्यिक अभिवृत्तियाँ समाज के नवनिर्माण में अपना योगदान अधिक सशक्तता से दे रही हैं। हालाँकि बाजारवादी प्रवृत्तियों के कारण साहित्यिक मूल्यों में गिरावट आई है परंतु अभी भी स्थिति नियंत्रण में है।

आज आवश्यकता है कि सभी वर्ग यह समझें कि साहित्य समाज के मूल्यों का निर्धारक है और उसके मूल तत्वों को संरक्षित करना जरूरी है क्योंकि साहित्य जीवन के सत्य को प्रकट करने वाले विचारों और भावों की सुंदर अभिव्यक्ति है। ❑

पीएसयू का निजीकरण और भारत पर इसका प्रभाव

✍ **आयन घोष**
कनिष्ठ सहायक - I (लिपिक-सह- कम्प्यूटर ऑपरेटर)
वित्त एवं लेखा विभाग, कोलकाता कार्यालय

हमारा देश स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही समाजवादी रहा है और यहां समाजवादी अर्थव्यवस्था रही है।

चाहे पहली औद्योगिक नीति-1956 रही हो या पंचवर्षीय योजनाएं, सभी में समाजवादी दृष्टिकोण अपनाया गया, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में कुछ ऐसी स्थितियां पैदा हुईं जिनके चलते भारत को अपनी ऐतिहासिक अर्थव्यवस्था की प्रकृति बदलनी पड़ी।

कई विदेशी अर्थशास्त्रियों ने रेलवे के निजीकरण को आपदा बताया। अनुभव भी देशों के बीच भिन्न होता है। अत्यधिक सामान्यीकृत तरीके से यह कहा जा सकता है कि ब्रिटेन में निजीकरण कमोबेश सफल रहा है जबकि रूस में असफल रहा है।

सरकारी राजस्व और आय वितरण पर दक्षता पर प्रभाव के कई शीर्षकों के तहत निजीकरण के प्रभाव का मूल्यांकन किया जा सकता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को कोरोना, मंहगाई, जनसंख्या वृद्धि और देश के वैज्ञानिकीकरण के बीच सामंजस्य स्थापित करने के लिए देश की कुछ संस्थाओं का निजीकरण करना पड़ा।

इस लेख में हम कुछ ऐसे ही कारणों की बात करेंगे जिन्होंने श्री नरेंद्र मोदी जी को निजीकरण करने के लिए मजबूर कर दिया और साथ ही भारत में निजीकरण से होने वाले प्रभावों के बारे में चर्चा करेंगे।

प्रस्तावना

हमारा देश जब स्वतंत्र हुआ तब जनसंख्या के दबाव और कृषि व्यवसाय की बहुलता थी। शिक्षा का अभाव था, गरीबी और बेरोजगारी का आलम था, ऐसे में केंद्र सरकार ने प्रथम औद्योगिक नीति-1956 को लागू किया।

इस औद्योगिक नीति में सरकार ने भारत में 3 प्रकार के उद्योग को मान्यता दी।

=> पहला, जो सरकारी सेक्टर के अंतर्गत थे, उनमें निजी सेक्टर का कोई हस्तक्षेप नहीं था।

=> दूसरा, जो सरकारी और निजी दोनों सेक्टर के अंतर्गत थे, लेकिन उसमें नीतियां और योजनाएं सारी सरकारी सेक्टर ही बना सकती थी। निजी क्षेत्र का पॉलिसी मेकिंग का कोई अधिकार नहीं था। वह बस पैसे निवेश कर सकती थी।

=> तीसरा, जो निजी क्षेत्र के अंतर्गत थे लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से सरकार लाइसेंसिंग व्यवस्था के माध्यम से निजी क्षेत्र में अपना वर्चस्व कायम रखी।

इसके अलावा, निजी क्षेत्र को पहली औद्योगिक नीति के अंतर्गत बहुत सारे प्रतिबद्ध झेलने पड़े, इसका नतीजा यह हुआ कि पहली औद्योगिक नीति बुरी तरह असफल हुई और भारत के पास बस 15 दिनों की अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा बची थी।

इस स्थिति में केंद्र सरकार ने विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से कर्ज की मांग की। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक ने भारत को उदारीकरण और निजीकरण की शर्त के बदले में ये कर्ज दिया।

तो जैसे की आपने पढ़ा कि भारत शुरू से ही निजीकरण के विरोध में रहा है, लेकिन आखिर क्या मजबूरी बन गई जो हमारे प्रधानमंत्री जी को निजीकरण करना पड़ा।

निजीकरण से क्या तात्पर्य है

निजीकरण प्रतिस्पर्धा समर्थक कार्यक्रम का एक अभिन्न अंग बन गया है और अब नई आम सहमति आर्थिक नीति की एक परिचित विशेषता बन गई है।

1980 के दशक में यूके और न्यूजीलैंड में निजीकरण का उदय हुआ। यह 1990 के दशक में महाद्वीप में फैल गया और अब बड़ी संख्या में कम विकसित देशों द्वारा निजीकरण की नीति अपनाई जा रही है।

निजीकरण से प्राप्त आय 1997 में यूके के खजाने में £65 बिलियन की थी। 5 वर्षों के दौरान, 1995-99, इटली के निजीकरण की आय $80 बिलियन तक आ गई।

ओईसीडी के अनुमानों के अनुसार, 1990-98 के बीच निजीकरण से राजस्व 1998 में हंगरी के सकल घरेलू उत्पाद का 24%, पुर्तगाल के सकल घरेलू उत्पाद का 20% और न्यूजीलैंड के 15% था।

भारत के साथ-साथ अन्य देशों में कई उद्योग और क्षेत्र सार्वजनिक क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं, जिसका अर्थ है कि वे सरकारी एजेंसियों के स्वामित्व और संचालित हैं।

हालांकि, धीरे-धीरे सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा शासित इन क्षेत्रों का स्थानांतरण निजी क्षेत्र में हो गया है। इस बदलाव को निजीकरण कहा गया है। कई कारकों ने इस बदलाव को जन्म दिया है।

कई विकसित देशों ने सार्वजनिक क्षेत्र की सीमाओं को दूर करने

के लिए विभिन्न उद्योगों के निजीकरण के साथ शुरुआत की और भारत ने जल्द ही इस ट्रेंड का पालन किया।

निजीकरण के तहत या तो सरकार की संपत्ति निजी मालिकों को बेच दी जाती है और उन्हें कुछ उद्योगों को संभालने की पूरी और एकमात्र जिम्मेदारी दी जाती है या सरकार द्वारा निजी व्यवसायों को कुछ उद्योगों के कामकाज में भाग लेने की अनुमति दे दी जाती है।

निजीकरण के कारण

निजीकरण के निम्न कारण हो सकते हैं।

अच्छी सेवाएं

जब तक कोई विशेष उद्योग सार्वजनिक क्षेत्र के अधीन न हो, यह सरकार द्वारा शासित होता है।

सरकारी सेक्टर में कोई प्रतिस्पर्धा नहीं होती है और बेहतर उत्पादन और परिणाम के लिए कोई जबरदस्ती नहीं होती है।

पब्लिक सेक्टर में दी जाने वाली सेवाएं ज्यादातर औसत होती हैं क्योंकि इसमें कोई प्रतिस्पर्धा नहीं होती है जिससे लाभ हानि का कोई मतलब नहीं रह जाता है, हालांकि, जब कोई विशेष उद्योग निजी क्षेत्र के अंतर्गत हो जाता है, तो निजी मालिकों से अपेक्षा की जाती है कि वे उस गुणवत्ता को उत्पादन प्रदान करें जो जनता के लिए हितकर हो और बेहतर परिणाम लाएं।

निजीकरण में निजी मालिक कामगारों से कड़ी मेहनत लेते हैं और कामगार भी अपना सर्वश्रेष्ठ देने का प्रयास करते हैं अन्यथा उन्हें सौंपे गए कार्य से इस्तीफा और अत्यधिक नुकसान उठाने का जोखिम होता है।

निजीकरण ग्राहकों को बेहतर सेवा सुनिश्चित करता है और निजीकरण के मुख्य कारणों में से एक रहा है।

अच्छी ग्राहक सेवा

निजी क्षेत्र के कर्मचारियों से अच्छी सेवा प्राप्त करने के अलावा उपभोक्ताओं को अच्छा ग्राहक सहयोग भी मिलता है।

भारत में सरकारी स्वामित्व वाली सेवाओं की स्थिति सभी को पता है। सरकारी कर्मचारी अपने कार्यों को समय पर पूरा करने में कम से कम रुचि रखते हैं। उपभोक्ताओं को अपने कार्यों को पूरा करने के लिए कई बार सरकारी कार्यालयों में फोन करना पड़ता है और एक छोटे से काम के लिए सरकारी कार्यालयों के बार बार चक्कर लगाने पड़ते हैं। हालांकि, निजी स्वामित्व वाले उद्योगों के साथ ऐसा नहीं है। यह एक और कारण है जिसके चलते निजीकरण पर विचार किया गया।

कम बजट घाटा

सरकार के पास प्रत्येक उद्योग के लिए एक विशेष बजट निर्धारित होता है। सरकार को उस विशेष बजट के भीतर अपने सभी कार्यों को पूरा करने की आवश्यकता होती है।

सार्वजनिक क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले कई उद्योगों को घाटा होने लगा था और उन्हें बजट घाटे का सामना करना पड़ा था। इस समस्या से निपटने के लिए सरकार ने निजीकरण के विकल्प पर विचार किया।

निजीकरण के क्षेत्र में समय और उपलब्धता के अनुसार बजट का निर्धारण किया जाता है और बहुत ही कम ऐसा होता है जब निजीकरण को बजट में घाटा उठाना पड़ा हो क्योंकि निजीकरण में कार्य ढिलाई से नहीं अपितु बड़ी तेजी और पूर्णता के साथ होता है।

पीएसयू (PSUs) क्या है

सरकारी स्वामित्व वाली कंपनियों को सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम (पीएसयू) के रूप में जाना जाता है।

सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयाँ किसी भी सरकार की आत्मा होती हैं। सरकार की सेवा करने के अलावा, सार्वजनिक उपक्रमों का देश के लोगों पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

पीएसयू बहुमत में यानी 51% या अधिक चुकता पूंजी का स्वामित्व केंद्र सरकार/किसी भी राज्य सरकार/आंशिक रूप से केंद्र सरकारों के पास और आंशिक रूप से एक या अधिक राज्य सरकारों के पास होता है।

भारत में, लोगों का निजी क्षेत्र की तुलना में सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों में बहुत अधिक विश्वास है, क्योंकि यह सरकार की सहायक कंपनी है। यह विश्वास इस तथ्य से विकसित होता है कि चूंकि वे सरकार द्वारा चलाए जाते हैं, इसलिए यह उन्हें धोखा नहीं देगा।

दूसरा कारक जिसने सार्वजनिक उपक्रमों को भारतीयों के बीच लोकप्रिय और विश्वसनीय बनाया है, वह है उनका कम उत्पाद और सेवा लागत। भारत एक विकासशील देश है, यहां हर कोई निजी क्षेत्र द्वारा दी जाने वाली उच्च स्तरीय सेवाओं को वहन नहीं कर सकता है। इसलिए, पीएसयू मध्यम वर्ग और समाज के गरीब वर्गों के प्रति ज्यादा उपयोगी साबित हुआ है।

आइए हम स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र का एक उदाहरण लेते हैं। हमारे देश में कई शीर्ष निजी अस्पताल हैं। फिर भी राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) द्वारा किए गए सर्वेक्षण के अनुसार, 42% आबादी रोगी अस्पताल में भर्ती होने के लिए सार्वजनिक अस्पतालों में जाते हैं। क्यों? क्योंकि सार्वजनिक अस्पताल कम इलाज लागत की पेशकश करते हैं, उनके पास सरकार द्वारा प्रायोजित बहुत सारी स्वास्थ्य योजनाएं हैं जो लोगों को अत्यधिक लाभान्वित करती हैं। कम खर्च के साथ, सार्वजनिक अस्पतालों में देश के कुछ बेहतरीन डॉक्टर और चिकित्सा कर्मचारी हैं, जो यह सुनिश्चित करते हैं कि सभी को अच्छी चिकित्सा सुविधाएं मिलें।

पीएसयू (PSUs) के निजीकरण से लाभ

पीएसयू के निजीकरण से निम्न लाभ हुए।

राजनीति प्रभाव से मुक्त

ऐसे कई उदाहरण हैं जहां राजनीतिक दल या नेता सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों के कामकाज को प्रभावित करते हैं। इससे सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में सबसे बड़े घोटाले और धोखाधड़ी हुई है, सेवाओं की गुणवत्ता में काफी गिरावट आई है।

निजीकरण से सार्वजनिक उपक्रमों में राजनीतिक हस्तक्षेप पर विराम लगेगा। इसका कारण यह है कि एक निजी कंपनी का मुनाफा कमाने का एक ही मकसद होता है, और यह किसी भी व्यक्तिगत प्रभाव की सेवा नहीं करता है।

कर्मचारी अक्षमता में सुधार

पीएसयू से जुड़ा एक नकारात्मक परिणाम कर्मचारी की अक्षमता या धीमी गति से काम करने की प्रक्रिया है।

निजी कंपनियों के विपरीत, एक सरकारी कर्मचारी को लक्ष्य पूरा करने के लिए उसके उच्च अधिकारियों द्वारा लगातार कठोर रवैया नहीं अपनाया जाता है। इसलिए, इसने कुछ पीएसयू कर्मचारियों के बीच एक सुस्त रवैये को जन्म दिया है, जो अनिवार्य रूप से धीमी गति से काम की प्रगति की ओर ले जाता है। हालांकि, निजीकरण के साथ, सख्त कार्य नियमों के साथ एक अलग कार्य वातावरण लागू किया जाएगा। इससे कर्मचारियों में उत्पादकता और दक्षता में वृद्धि होगी।

ज्यादा राजस्व रिटर्न

जब भी कोई सरकार किसी सार्वजनिक उपक्रम के विनिवेश में संलग्न होती है, तो वह आमतौर पर अपने कुछ शेयर अन्य निजी कंपनियों को बेच देती है या आवंटित कर देती है।

यह अंततः सरकार को एक बड़ी राशि का रिटर्न प्राप्त करने की ओर ले जाता है। इतना ही नहीं बल्कि जब भी वह विशेष इकाई लाभ कमाती है, तो सरकार को भी कुल लाभ में उसका हिस्सा मिलता है। परिणामस्वरूप अधिक राजस्व रिटर्न देश के आर्थिक विकास को सुनिश्चित करता है।

पीएसयू (PSUs) के निजीकरण से हानि

पीएसयू से निम्नलिखित हानि हुई है।

जनहित पर कम ध्यान केन्द्रण

सार्वजनिक क्षेत्र वंचितों के लिए कम कीमतों पर उत्पाद और सेवाएं प्राप्त करने का एकमात्र तरीका है।

बहुत सारे गरीब समुदायों की सेवा करने वाली इन संस्थाओं का निजीकरण किया जाता है, तो यह निश्चित रूप से तबाही का कारण बनेगा।

निजी कंपनियां लाभ-उन्मुख हैं और लाभ और कल्याण साथ-साथ नहीं चलते हैं। सार्वजनिक बैंक विशेष रूप से सभी के लिए बैंकिंग सुविधाएं प्रदान करने के लिए गैर-लाभकारी ग्रामीण क्षेत्रों में भी अपनी शाखाएं और एटीएम खोलने की पहल करते हैं, लेकिन निजी बैंकों के लिए इसे पूरा करने की अत्यधिक संभावना नहीं है। इसलिए निजीकरण भले ही औसत और मध्यम वर्ग के लिए अच्छा हो, लेकिन यह निश्चित रूप से समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए खुशी का कारण नहीं होगा।

युवाओं के लिए नौकरियों की संख्या में कमी

भारतीयों में सरकारी नौकरियों के प्रति लगाव है, क्योंकि सार्वजनिक क्षेत्र में युवाओं के लिए बड़ी संख्या में नौकरियां पैदा होती हैं।

अधिकांश सरकारी नौकरियों में उम्मीदवार को एक विशिष्ट डिग्री रखने की आवश्यकता नहीं होती है, इसके बजाय उन्हें अपने वांछित पद के लिए संबंधित प्रतियोगी परीक्षा के लिए अर्हता प्राप्त करने की आवश्यकता होती है। लेकिन निजी कंपनियां निश्चित रूप से इस तरह से काम नहीं करती हैं; उनमें से अधिकांश आवेदकों की शैक्षिक योग्यता के आधार पर भर्ती प्रक्रिया चलाते हैं। इस प्रकार, निजीकरण के परिणामस्वरूप देश में बेरोजगारी होगी।

जब सरकारी संस्थाओं का निजीकरण किया जाता है तो नई नियुक्तियों में रुकावट आती है और पुराने कर्मचारियों को उनकी नौकरी से निकाल दिया जाता है।

पूंजीपतियों को लाभ

ऐसे कई उदाहरण हैं जहां पूंजीपति सत्ता और धन की मदद से निजीकरण की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं।

इससे अनुचित व्यापार होता है और शेयरों का बड़ा हिस्सा उन्हें दिया जाता है। हालांकि, उनका एकमात्र आदर्श वाक्य लाभ अर्जित करना है जो केवल उनकी सुविधा के लिए सार्वजनिक उपक्रमों का शोषण करता है। बिजली क्षेत्र ऐसा ही एक उदाहरण है।

सरकार ने कुछ बड़े शहरों में बिजली क्षेत्र का निजीकरण किया है। इसके कारण, कंपनियां इकाइयों की उच्च दरों की बोली लगाती हैं और अंततः ग्राहकों और विभाग का शोषण कर रही हैं।

उपसंहार

जैसा कि उनके नाम से पता चलता है, 'सार्वजनिक' क्षेत्रों का उद्देश्य जनता या "आम आदमी" की सेवा करना है। हालांकि, पीपीपी (पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप) मॉडल सरकार और नागरिकों के लिए जो लाभ देता है, उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती है।

बहुत से लोग मानते हैं कि निजीकरण को तब तक स्वीकार किया जा सकता है जब तक कि यह जनहित का उल्लंघन न करे। लेकिन फिर, क्या यह संभव है? ❑

कोमल चावल / चकोवा चावल / बोका चावल - THE REAL FAST FOOD

✍ज्योतिष फुकन
वरिष्ठ सहायक -1
मानव संसाधन विकास विभाग, दुलियाजान

हमारा असम विभिन्न उत्पादों से बहुत समृद्ध है जो प्रकृति ने नि:स्वार्थ रूप से प्रदान किया है। प्रकृति ने हमें अपनी सभी जरूरतों को पूरा करने के लिए सब कुछ दिया है। हम विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों और औषधीय पेड़ पौधों से समृद्ध हैं।

असम में धान की लगभग 200 किस्में हैं। हालांकि, उनमें से ज्यादातर किस्मों की खेती अब लगभग न के बराबर है। इनमें से दो प्रजातियों को भौगोलिक सूचकांक (जीआई टैग) मिल चुका है। ये दो हैं - जहा चावल और चकोवा चावल या बोका चावल। असम के बाहर के लोग जहा चावल के बारे में यह जानते हैं कि वह एक विशेष सुगंध से भरपूर होता है। ताजे जहा चावल का सुगंध ऐसा होता है कि इसे पकाने पर पड़ोसियों तक को भी पता चलता है कि आपके घर में आज जहा चावल पकाया जा रहा है। गरमा गरम जहा चावल में एक ऐसा अनोखी सुगंध और स्वाद होता है कि इसे बिना किसी पकवान के भी आराम से खाया जा सकता है। आजकल जहा चावल विदेशों में भी निर्यात किया जाता है।

हालांकि, चकोवा धान या बोका धान के कोमल चावल को लेकर अभी तक ज्यादा प्रचार नहीं हुआ है। कोमल चावल को आमतौर पर ऊपरी असम में चकोवा चावल और निचले असम में बोका चावल भी कहा जाता है। चकोवा चावल की विशेषता अत्यंत दुर्लभ है। यह एकमात्र वास्तविक फास्ट फूड है जिसे बहुत आसानी से तैयार किया जा सकता है। ऐसा इसलिए है कि यह सामान्य तापमान के पानी में कुछ मिनट के लिए भिगोकर रखने से ही खाने के लिए तैयार हो जाता है। पहले के समय में, चकोवा चावल को नाश्ते के रूप में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता था। हालांकि, समय के साथ-साथ विभिन्न मसालेदार खाद्य पदार्थों के आगमन के कारण इसका उपयोग कम हो गया है।

कोमल चावल की तैयारी की प्रक्रिया

कोमल चावल बनाने के लिए आमतौर पर नरम धान जैसे चकोवा, नानिया आदि का उपयोग किया जाता है। सबसे पहले धान को अच्छे से छान कर एक बड़े बर्तन में पानी डालकर उबाला जाता है। उबालने के दौरान ऊपर से ढक्कन के साथ ढकना जरूरी है। लगभग एक घंटे तक उबालने के बाद जब एक-एक करके सारे धान फूट जाएं, तब धान को बांस की छलनी, ड्रायर आदि में डालकर बचे हुए पानी को निकाल लिया जाता है। जब पानी निकल जाए तो इसे बांस की चटाई पर फैला कर तेज धूप में सुखाया जाता है । ऐसा करते समय याद रखने वाली एक महत्वपूर्ण बात यह है कि धान को एक ही दिन में सुखना चाहिए। नहीं तो कोमल चावल का असली स्वाद नहीं मिलेगा। इसलिए इस काम को धूप वाले दिन में शुरू करना सबसे अच्छा है। जब चावल अच्छी तरह से सूख जाता है तो इसे दो दिनों के लिए एक बर्तन या बोरियों में रखा जाता है और फिर चक्की या ढेंकी में पीस लिया जाता है। इस तरह से तैयार किए गए कोमल चावल को लंबे समय तक जमा किया जा सकता है। पहले के दिनों में इस तरह के कोमल चावल को महीनों तक मिट्टी के कलश में रखा जाता था।

उपयोग या उपभोग की विधि -

उपरोक्त विधि से तैयार किया गया कोमल चावल एक बार धोकर सामान्य तापमान के पानी में कुछ मिनट के लिए भिगोकर रखने पर ही खाने के लिए पर्याप्त नरम हो जाता है। लगभग 30 मिनट के लिए भिगोकर रखने पर यह पूरी तरह से नरम हो जाता है। जैसे ही वह नरम हो जाए, उसे हाथ से निचोड़ कर पानी निकाल देने पर खाने के लिए तैयार हो जाता है। हालाँकि, मैं व्यक्तिगत रूप से इसे थोड़ा सख़्त खाना पसंद करता हूँ।

कोमल चावल का नाश्ता आमतौर पर दही या दूध और गुड़ के साथ खाया जाता है। कई लोग स्वाद बढ़ाने के लिए मलाई, केला आदि मिलाते हैं। जिन लोगों को मीठा पसंद नहीं होता है वे आलू को भूनकर अदरक और मिर्च के साथ खाना पसंद करते हैं। इस नाश्ता को आप सूखे तले हुए आलू या किसी और सब्जी के साथ भी आसानी से खा सकते हैं। सूखी मछली को भूनकर इसके साथ खाने पर एक अलग ही स्वाद मिलता है। बिना मसाले के खाया जाने वाला यह नाश्ता वास्तव में बहुत ही स्वास्थ्यवर्धक होता है।

ऊपर वर्णित विधि के अलावा, कोमल चावल बनाने की एक और विधि है, जिसे आमतौर पर तले हुए चावल के रूप में भी जाना जाता है। इस विधि में चावल को लगभग तीन दिनों तक पानी में भिगोया जाता है, अच्छी तरह से निचोड़ कर कड़ाही में सुखाकर

तला जाता है। जब एक-दो चावल फूटने लगें तो उसे कड़ाही से हटाकर अगले दिन किसी ढेंकी या चक्की में पीस लिया जाता है। हालांकि, इस तरह से तैयार किए गए तला चावल को खाने के दौरान गर्म पानी में भिगोना पड़ता है। यह तले हुए चावल ठंडे पानी में भिगोने पर खाने के लिए तैयार नहीं होते हैं। आमतौर पर तले हुए चावल बनाने के लिए बोरा धान उपयोग किया जाता है। यह जानना महत्वपूर्ण है कि बोरा धान स्वस्थ्य के लिए हितकारी नहीं है, खासकर उच्च रक्तचाप से पीड़ित लोगों के लिए।

दुर्भाग्य से, आजकल स्वस्थ कोमल चावल लगभग न के बराबर है। दुलियाजान और उसके आसपास, विशेष रूप से टेंगाखाट के राइस मिलों में केवल बोरा धान के तले हुए चावल उत्पादन किए जाते हैं। यदि हम किसानों को चकवा चावल का उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करें और इसके प्रचलन को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करें, तो किसानों को आर्थिक रूप से लाभ होगा और लोग तुरंत तैयार किया जा सकने वाले एक स्वादिष्ट नाश्ते का आनंद ले सकेंगे। मेरे अनुरोध के बाद, शिवसागर के दो किसानों ने इस साल थोड़ा चकवा धान उगाया है। अगर बाढ़ नहीं आती है, तो गाँव के लोग अगले साल कोमल चावल का नाश्ता खाने की उम्मीद कर सकते हैं। ❑

भ्रष्टाचार-मुक्त भारत विकसित भारत

✍ **अजय कुमार अग्रवाल**
उप महाप्रबंधक (अग्निशमन)
सुरक्षा एवं पर्यावरण विभाग
पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी

आज विश्व के सभी राष्ट्र, किसी न किसी स्तर पर भ्रष्टाचार से जूझ रहे हैं-पीड़ित हैं। चाहे वह सरकारी क्षेत्र हो अथवा निजी क्षेत्र। जब कोई नागरिक, अपने छोटे से छोटे या बड़े से बड़े कार्यों को शीघ्र ही अनुचित व भ्रष्ट मार्गों के उपयोग द्वारा पूरा करवाना चाहता है, जिससे उसके द्वारा कम समय में व कम परिश्रम करके अधिक धन कमाया जा सके - तो इस प्रकार के कार्य समाज को भ्रष्ट बना देते हैं। ऐसा समाज निश्चित ही विनाश की ओर अग्रसर होगा। समाज की मूल इकाई नागरिक ही हैं। अतः हमें किसी भी स्तर पर, कैसे भी भ्रष्ट आचरण को नहीं अपनाना चाहिए। जब हम व्यक्तिगत स्तर पर जागरूक रहेंगे, तो निश्चय ही हमारा देश भ्रष्टाचार मुक्त हो जाएगा।

सरकारी नीतियों व कानून द्वारा यदि इस समस्या को समूल उखाड़ फेंकने के प्रयास बड़े पैमाने पर किए जाएं तो सफलता शीघ्र ही मिल सकती है। इसके लिए भ्रष्ट नागरिकों को गंभीर रूप से दंडित करने का प्रावधान आवश्यक है ।

कुछ सरकारी अधिकारीगण अपने-अपने कार्य को कर्तव्यनिष्ठा से न करके रिश्वत लेकर सेवा प्रदान करते हैं। साथ ही वे सरकारी तंत्र के हेतु कार्य करते हैं। फलस्वरूप जनसाधारण को सरकारी सेवाएं प्राप्त ही नहीं हो पाती। जो अधिकारी रिश्वत लेते हैं वे अधिक धन अर्जन करते हुए उच्च जीवन शैली (भौतिक रूप से) का उपभोग करते हैं। इसके फलस्वरूप उनके सहयोगीगण, जो ईमानदारी का पालन करते हैं- उनके परिवारजनों में हीन भावना जैसी वृत्ति उत्पन्न हो जाती है, जो एक सामाजिक समस्या है। अतः नैतिक व्यक्ति को नैतिकता पूर्ण जीवन यापन करने के लिए एक उचित वातावरण नहीं प्राप्त हो पाता है।

दोषी व्यक्तियों को उचित रूप से दंडित करना भी आवश्यक है। यातायात के नियमों का उल्लंघन करना आम है। गति सीमा को तोड़ना, लाल बत्ती पार करना, सीट बेल्ट न लगाना, हेलमेट न पहनना आदि। पकड़े जाने पर रिश्वत देकर आगे बढ़ जाना - यह सभी हमारी पीढ़ी के लिए साधारण सी बात है जिसका निवारण नितांत आवश्यक है। प्रत्येक नियम का उल्लंघन के लिए जुर्माना अथवा सजा होनी चाहिए। तभी लोग नियमों का पालन करेंगे। दोषी व्यक्तियों व गतिविधियों का मीडिया द्वारा प्रचार-प्रसार होना चाहिए जिससे समाज में जागरूकता आएगी व लोग भ्रष्टाचार करने से भयभीत होंगे। जनमानस मीडिया से बहुत शीघ्र प्रभावित होता है। दोषी लोगों को दंडित होते देख कर अवश्य ही साधारण लोग कोई भी गलत कार्य करने में झिझकेंगे, क्योंकि कोई भी अपना आत्मसम्मान खोना नहीं चाहता है।

हम सभी देशवासी सरकारी नीतियां व मीडिया जब संयुक्त रूप से, भ्रष्टाचार उन्मूलन हेतु कार्य करेंगे तो यह हमारा प्रिय देश निश्चित रूप से भ्रष्टाचार मुक्त होकर एक उन्नत एवं श्रेष्ठ राष्ट्र के रूप में संपूर्ण विश्व में चमकेगा। ❑

प्रेम विस्तार है और स्वार्थ संकुचन

✍ **अंजना राजपूत**
आश्रित - कमलजीत राजपूत
महाप्रबंधक (सतर्कता)
सतर्कता विभाग, निगमित कार्यालय, नोएडा

हमारे देश भारत में सदियों से ही अनेक महानुभावों ने समय-समय पर जन्म लेकर अपने उच्च विचारों से हमें कृतार्थ किया है। आज विश्व में सभी राष्ट्र विकास की दौड़ में एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ में लगे हुए हैं। समाज में नैतिकता का पतन हो रहा है। युवा पीढ़ी के पथभ्रष्ट होने के लक्षण दिखाई दे रहे हैं। ऐसे समय में स्वामी विवेकानंद जी का यह विचार- "प्रेम ही विस्तार है, स्वार्थ संकुचन है" हमारा पथ प्रदर्शित करता है और हमें सही राह पर चलने की प्रेरणा देता है। स्वामी जी ने इस पंक्ति में समस्त संसार को उन्नति और खुशहाली का मूल मंत्र प्रदान कर दिया है। यह मंत्र एकदम सटीक और हर युग के समय के अनुकूल है।

सीधे और सरल शब्दों में प्रेम वह अभिव्यक्ति है जिसे हम व्यक्त और अनुभव कर सकते हैं और जिससे हम प्रसन्नचित्त रहते हैं। हम जो भी कार्य करते हैं बहुत मन लगाकर करते हैं। प्रेम को अपनाकर हम अपने विचारों को सकारात्मक बनाते हैं जिससे हमारे आसपास का वातावरण भी सकारात्मक बनता है। हमारे व्यवहार और चरित्र में भी यह अद्भुत बदलाव आते हैं। यही नहीं जो व्यक्ति हमारे संपर्क में आते हैं, वे भी सकारात्मक ऊर्जा से भर जाते हैं, इस तरह से प्रेम का विस्तार होता है। प्रेम ऐसा गुण है जो हमारे अंदर दिव्य आभा उत्पन्न करता है, जिससे सब हमारी ओर आकर्षित होने लगते हैं। रोजमर्रा की जिंदगी में भी हम यह महसूस करते हैं कि हम मिलते तो कई व्यक्तियों से हैं पर याद सिर्फ उन्हें ही रखते हैं जो हम पर अपनी अटूट छाप छोड़ जाते हैं। जिन परिवारों या संस्थाओं में आपसी प्रेम और सौहार्द बना रहता है वे कठिन से कठिन बाधाओं को भी हंसकर आसानी से पार कर लेते हैं। इतिहास में अनेक उदाहरण मिलते हैं, जहां महापुरुषों ने प्रेम का विस्तार किया है। जैसे - स्वामी विवेकानंद, महात्मा बुद्ध, महात्मा गांधी, डॉक्टर अब्दुल कलाम। 'योग दिवस' मनाकर भी हम पूरे विश्व में प्रेम का ही प्रचार करते हैं। हमें पर्यावरण से भी प्रेम करना चाहिए। पेड़ पौधे लगाने चाहिए और उनका ध्यान भी रखना चाहिए क्योंकि हरियाली सकारात्मकता की प्रतीक है।

दूसरी ओर अगर हम स्वार्थी हो जाते हैं तो हम सिर्फ अपने ही हित के बारे में सोचते हैं दूसरों के हित के बारे में नहीं। हमारे घर के पास दो भाई अपनी मां के साथ रहते हैं। जायदाद पाने की लालच में छोटे भाई ने स्वार्थवश भाई के खिलाफ मां के कान भर दिए। नतीजतन मां ने बड़े बेटे को घर से बाहर निकाल दिया। ऐसा करते हुए दोनों ने एक बार भी नहीं सोचा कि उस पर क्या बीतेगी। स्वार्थ के चलते दुनिया में कितने ही युद्ध हुए हैं। अपनों ने ही अपनों के सिर काट दिए हैं। औरंगजेब ने भी सत्ता हथियाने के लिए अपने ही पिता को बंदी बनाया था, अपने भाइयों को मौत के घाट उतार दिया था। स्वार्थ से दुनिया छोटी हो जाती है, इस प्रकार स्वार्थ हमें संकुचन की ओर ले जाता है। उदाहरण के तौर पर हमारे अंदर कोई भी ऐसी कला है जो दूसरों को नहीं आती। अब अगर वह कला हम किसी को नहीं सिखाएंगे तो वह कला हमारे साथ ही समाप्त हो जाएगी। इस तरह उस कला का विस्तार नहीं अपितु अंत हो जाएगा।

स्वार्थी बनने की प्रवृत्ति नकारात्मकता का प्रतीक है। नकारात्मकता हमें जीवित नहीं बल्कि धीरे-धीरे मृत्यु की ओर ले जाती है। हम प्रतिदिन खबरों में आत्महत्या के बारे में पढ़ते सुनते हैं। आत्महत्या सिर्फ वही स्वार्थी व्यक्ति करते हैं जो अपने बारे में अधिक और परिवारजनों के विषय में कम सोचते हैं। ऐसा व्यक्ति एक बार भी यह नहीं सोचता कि उसके इस कदम से परिवार को कितना दुख होगा। पृथ्वी पर अगर सब लोग स्वार्थी हो जाते हैं तो शायद हमारा संसार आज जैसा है वैसा न होता। संसार का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता। संसार बचा ही इसलिए है क्योंकि संसार में अभी भी प्रेम व्याप्त है। संसार में कई लोग ऐसे हुए हैं जिन्होंने स्वार्थ से ऊपर उठकर परमार्थ के लिए काम किया और संसार को सुंदर बनाया।

अंत में इतना ही लिखना चाहूंगी कि हमें स्वार्थ का परित्याग कर जीवन में प्रेम को अपनाना चाहिए। चाहे वह निर्जीव हो, प्रेम करना चाहिए। प्रेम का विस्तार करते रहना चाहिए। स्वार्थी बनने से हमारा विकास रुक जाएगा और हम असमय ही काल द्वारा ग्रसित कर लिए जाएंगे। हमें निःस्वार्थ भाव से समाज की सेवा करनी चाहिए। जो इंसान स्वार्थी होते हैं वे धरा पर बोझ होते हैं। ऐसे व्यक्ति को समाज भी स्वीकार नहीं करता। अतः जो प्रेम करता है वह जीता है, जो स्वार्थी है वह मर जाता है। जीने का यही एकमात्र सिद्धांत है। स्वामी जी के विचार वर्तमान में ही नहीं अपितु चिरकाल तक आने वाली पीढ़ियों को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते रहेंगे। ❑

गरीबी केवल धन की कमी नहीं है

✍ **नवनीता राजपूत**
आश्रित - कमलजीत राजपूत
महाप्रबंधक (सतर्कता)
सतर्कता विभाग, निगमित कार्यालय, नोएडा

अक्सर हम गरीबी को पैसे की कमी समझते हैं। अर्थात अपना घर न खरीद पाना, दो वक्त की रोटी न होना, अनपढ़ होना और न जाने क्या-क्या। मेरा मानना है कि गरीबी दो प्रकार की होती है - आर्थिक और मानसिक।

आर्थिक गरीबी अर्थात पैसों की कमी होना। अक्सर, हम इन्हें गरीबी रेखा के नीचे वाली श्रेणी में डालते हैं। पैसों की कमी होने के कारण लोग अपनी दो वक्त की रोटी का बड़ी मुश्किल से इंतजाम कर पाते हैं। इनमें से कई ऐसे होते हैं जो ज्यादा पढ़े लिखे नहीं होते या अनपढ़ होते हैं और कई ऐसे होते हैं जिन्हें अपने घर के खर्चे निकालने के लिए अपने बच्चों तक को काम पर लगाना पड़ता है या उन्हें बेचना भी पड़ता है। अक्सर हमें इनके परिवार सड़क किनारे भीख मांगते हुए, मजदूरी करते हुए या और कोई छोटे-मोटे काम करते हुए नजर आते हैं पर क्या आपको सच में लगता है कि असली गरीबी यही है? मेरी नजर से केवल वह लोग ही गरीब नहीं हैं जो आर्थिक रूप से कमजोर होते हैं। बल्कि वे लोग भी गरीब हैं जो मानसिक रूप से छोटे दिल के होते हैं।

मानसिक गरीबी जिसके बारे में हम सोचते या बात करते हैं। आखिर मानसिक गरीबी होती क्या है? जब मनुष्य दूसरे मनुष्य की बुराई करे, दूसरों को समान अवसर दें या सम्मान न करें। आप कह सकते हैं कि कंजूस व्यक्ति जो सिर्फ अपने बारे में सोचता है या उसके पास सब कुछ होते हुए भी कुछ भी किसी के साथ न बाँटना हो या न देना चाहता हो, ऐसा मनुष्य मानसिक रूप से गरीब होता है। इनमें वे व्यक्ति भी आते हैं, जो गलत नजरिए वाले होते हैं जैसे - "जेसिका लाल हत्याकांड" में जेसिका की हत्या करने वाला व्यक्ति मानसिक रूप से गरीब था क्योंकि उसने अपनी बात ऊपर रखने के लिए एक छोटी सी बात पर जेसिका को मौत के घाट उतार दिया।

अक्सर मानसिक रूप से गरीब व्यक्ति उचित निर्णय नहीं लेना चाहता अर्थात केवल एक पक्ष की बात सुनकर मुद्दा खत्म कर देता है, जबकि उसको दोनों पक्षों की बात एक साथ सुननी चाहिए ऐसे लोग अक्सर सब को ठेस पहुंचाते हैं। मानसिक रूप से गरीब व्यक्ति कई बार भेदभाव भी करता है। भेदभाव किसी भी प्रकार का हो सकता है- धर्म, जाति, लिंग इत्यादि। मनुष्य चाहे जितना भी अमीर क्यों न हो परंतु यदि उसके विचार, भाव, व्यक्तित्व शुद्ध न हो तो वह भी गरीब होता है। कबीरदास जी ने कहा है -

"बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंछी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।।"

इस दोहे में, कबीरदास जी एक बड़े व्यक्ति को या फिर" एक अमीर व्यक्ति की तुलना एक खजूर के वृक्ष के साथ करते हैं। वे कहते हैं कि, "जैसे खजूर का वृक्ष लंबा होता है। वह न तो पंक्षी को छाया देता है, और उसका फल भी बहुत ऊपर लगता है। अर्थात वह किसी राहगीर के काम नहीं आता, ठीक उसी प्रकार यदि आप एक बड़े या अमीर व्यक्ति हैं, तो कोई बात नहीं जब तक आपके पास अच्छा व्यवहार और संस्कार न हो।" यदि आप किसी दूसरे व्यक्ति से, पेड़-पौधे, जानवर की इज्जत न करना जानते हो, आप पूर्णता मानसिक रूप से गरीब हैं।

उदाहरण के तौर पर एक अमीर व्यक्ति है। वह पैसे देकर जो सेवा खरीदना चाहे खरीद सकता है। वहीं दूसरी ओर एक अनपढ़ व्यक्ति है जो दो वक्त की रोटी के लिए उस अमीर आदमी की कंपनी में काम करता है। अमीर व्यक्ति उसकी कंपनी में उधार मांगने वाले लोगों को दुत्कार कर भगा कर देता है और वहीं दूसरी ओर वह चौकीदार सबका आदर पूर्वक स्वागत करता है, सम्मान और सेवा करता है, जो कंपनी के गेट पर खड़ा होता है। कहने का तात्पर्य है कि एक व्यक्ति पैसे से अमीर या गरीब नहीं होता वह भावनाओं और मन के शुद्ध होने से ही अमीर होता है।

हम किसी भी व्यक्ति को केवल उसकी वेशभूषा, रंग-रूप को देखकर गरीब नहीं कह सकते क्योंकि कई लोग ऐसे गरीब होते हैं जो देखने में और आर्थिक रूप से काफी अच्छे होते हैं, परंतु उनमें बुद्धि नाम मात्र के लिए होती है। इसलिए, अगली बार किसी को भी गरीब कहने से पहले एक बार अपने व्यक्तित्व में झाँके और देखें कि कहीं आप मानसिक रूप से गरीब तो नहीं हैं क्योंकि, अगर आप मानसिक रूप से गरीब होंगे तो आपके पास कोई हक नहीं है कि आप सामने वाले को जो आर्थिक रूप से कमजोर है, उसे गरीब कहें। ❑

"चकोर" : आत्मरक्षा जुर्म नहीं

✍ **स्तुति पाठक**
प्रबंधक (प्रशासन)
पश्चिमी परिसंपत्ति, मोरान

"प्रणाम बाउ जी, त्रिपाठी भैया हैं क्या? "

"अरे बुधिराम! तू इतनी सुबह-सुबह ? अभी तो मुन्ना कोर्ट जाने की तैयारी में लगा होगा। तू बाद में आ "

"नहीं बाउ जी, काम बड़ा जरूरी है मैं यही बड़े भैया की राह देखता हूँ, जाते जाते दो बातें कर जाऊँ अपनी" (संकोच में)

"अरे तू समझता क्यों नहीं, कहा न जा, बाद में आना"

"बाउ जी दया करो एक बार बस वकील भैया से मिल लूं , मैं ज्यादा समय न लूं उनका, कसम है मोहे"

मैं अपने कमरे में सिर पकड़ कर बैठा था कि बाहर की ये आवाज़ें सुन कर बाहर आ गया।

"क्या है रे बुधिराम, सुबह-सुबह काहे को बाउ जी से उलझा पड़ा है शाम को आना अभी मुझे देर हो रही। "

लेकिन बुधिराम ने तो जैसे कुछ सुना ही नहीं, अपनी ही धुन में बोले जा रहा था बस।

कहने लगा " याद है पार साल आप कहे रहे कि अपना जमीन बेच दो अच्छे पैसे दे दूंगा, सो आज उसी को बेचने आया हूँ, लेकिन पैसा मोहे नकद चाहि भैया, तुरंत। "

अब मैं सकते में आ गया; एक ओर मिन्नी की ये हालत, उसपर आज कोर्ट में एक जरूरी केस है। उसपर ये बुधिराम जिसकी जमीन पर मेरी पिछले 15 सालों से नज़र है कि लेकर मिन्नी की शादी के लिए रख छोड़ू, अपनी जमीन बेचने के लिए गिड़गिड़ा रहा ।

"लेकिन तूने तो बड़े घमंड में कहा था कि उस जमीन से अपनी बिटिया को डॉक्टर बनाऊंगा, अब क्या हुआ ? क्या भाग गयी तेरी बेटी ?"

तब तक बाउ जी भी अख़बार से मुँह निकाल कर कहने लगे "अरे कहा था न लड़की की ज़ात है। ये टूशन वुशन में यह नैन मटक्का होवत है, न भेज लड़की को लेकिन नहीं तुझे तो कुछ सूझत ही न था, अब भुगत। देख हमारी मिन्नी को बस स्कूल से घर और घर से स्कूल उसके बाद सिलाई और घर के काम काज"

लेकिन बुधिराम को जैसे कुछ सुनाई ही न दे रहा था बस जमीन अभी लिखवा लो और अभी नकद दे दो की ज़िद पकड़ रखी थी। अब मुझे झुंझुलाहट होने लगी, एक तो शहर के सबसे बड़े सेठ के फ़ोन पर फ़ोन आ रहे हैं, उसपर मिन्नी की अजीब सी हालत, न खाती है न पीती है बस बिस्तर में पड़े-पड़े शून्य में निहारती रहती है। पढ़ने में तो उसका खाक ही मन लगता था। उस पर अब स्कूल कॉलेज जाना भी छोड़ बैठी है और अब ये बुधिराम की सनक। जैसे तैसे मैंने उसे समझा बुझा कर 5000 रुपये देकर शाम को आने के लिए राजी किया और खुद फ़ोन पर बात करने अंदर की ओर भागा।

"अरे त्रिपाठी? कहां हो तुम? मूर्ख कब से फ़ोन मिला रहा तुझे, सीधे कोर्ट पहुंचो एक छोटा सा काम आन पड़ा है। " और फ़ोन कट गया।

मैं भागता हुआ कोर्ट पहुंचा, वहाँ देखता हूँ कि सेठ जी बड़े गुस्से में खड़े हैं अभी मैं उनतक पहुँचता हूँ कि सामने से आते मुजरिम को देख मेरे होश उड़ गए।

क्या वह चकोर नहीं थी, बेड़ियों में जकड़ी जैसे कोई आतंकवादी, बड़ी-बड़ी मासूम लेकिन शांत आँखें, चेहरे पर चोट के निशान, माथे की चोट पर जमा हुआ खून, उसके पीछे उसका बाप बुधिराम मेरे दिए हुए 5000 रुपये वैसे ही हाथ में पकड़े एकदम तटस्थ भाव से चल रहा था। मुझे सदमा लगा ये चकोर और मिन्नी साथ ही तो खेल कर बड़ी हुई है। 3 साल की दुधमुई चकोर को जब उसकी माँ छोड़ कर चली गयी तो उसका ज्यादातर बचपन मेरे ही आँगन में बीता था, जगह-जगह उड़ी-उड़ी फिरती थी। इसीलिए सब उसे चकोर ही बुलाने लगे थे। थी तो मिन्नी की हमउम्र मगर बुद्धि में उससे कहीं ज्यादा परिपक्व। शाम को बुधिराम कारखाने से लौटते हुए उसे लेने आता। जब तक मेरी माँ जिन्दा रही बुधिराम को दूसरी शादी के लिए समझाती रही जिसे वो हंस कर टाल जाता।

मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था, एकदम से चकोर और मिन्नी की

शक्लें आपस में गड्ड मड्ड होने लगी थीं, मैं वहीं चक्कर खाकर बैठ गया। साथी वकीलों ने मुझे घेर लिया तब तक सेठ जी सामने से चल कर आये मेरी बिगड़ती तबियत को नज़रअंदाज़ कर बोले "देख त्रिपाठी, ये लड़की मुझे फांसी पर लटकी हुई चाहिए। तुझे मुँह मांगे पैसे मिलेंगे, बस मेरा काम हो जाना चाहिए। "

ऐसा कहकर वे अपनी आलीशान गाड़ी में बैठ कर चले गए। मैं उठने की हालत में नहीं था, तब तक जब मुझे किसी ने सहारा दे कर उठाया और मेरे घर की ओर चलने लगा, मैंने जब उसे पहचानने की कोशिश की तो पाया कि ये और कोई नहीं बुधिराम ही था, एक हाथ में वही 5000 रुपये पकड़े और दूसरे से मुझे सहारा देते हुए। मुझे उसके साहस से इतना खौफ आने लगा था कि बहुत देर तक होश संभाले नहीं रह सका। अगली सुबह जब मैं उठा तो पूरा घर मेरे सिरहाने मौजूद था, आज तो मिन्नी भी अपनी उदासी छोड़ मेरे पैरों की तरफ गुमसुम बैठी थी। जैसे ही मैंने उसे अपनी तरफ आने का इशारा किया, वह एकदम से उठ खड़ी हुई और कहने लगी प्लीज चकोर को बचा लो। उसने कुछ गलत नहीं किया। मेरी पत्नी ने उसे सँभालने की कोशिश की मगर जैसे उसे दौरे पड़ने लगे। वह चीखने लगी और बस एक ही बात पागलों की तरह दुहराने लगी "पापा चकोर को बचा लो प्लीज। उसने कुछ गलत नहीं किया" घर वाले उसे वहाँ से ले गए, मुझे डॉक्टर ने आराम करने को कहा था। दिल का दौरा उतना तीव्र न सही मगर हुआ तो था न। लेकिन मुझे चैन कहाँ, बस चकोर की निस्तेज आँखें, मिन्नी का पागलपन और बुधिराम का पहाड़ जैसा साहस मुझे आँखें बंद करके सोने नहीं देता था। मेरे सिरहाने रखे फ़ोन में सेठ जी के 50 मिस्ड कॉल्स पड़े थे, लेकिन मुझे इस वक्त बस बुधिराम से बात करनी थी। वही ये गुत्थी सुलझा सकता था क्योंकि मिन्नी पिछले 3 दिनों से दवाओं के असर में पड़ी सो रही थी, कभी कभी नींद में चिल्ला पड़ती "चकोर को जाने दो, जाने दो हमें" तो कभी "पापा चकोर को बचा लो, उसने कुछ गलत नहीं किया"| उसकी ये हालत मैं देख नहीं सकता था, सो रात को सब के सोने के बाद चुपचाप बुधिराम के घर की तरफ निकल पड़ा लेकिन उसका घर तो खाली पड़ा था। पड़ोसियों से पूछने पर मालूम हुआ की वह बस अड्डे की तरफ जाता दिखा है। मैंने हड़बड़ी में घर पहुंच कर बटुआ निकाला और जीप की चाभी लेकर बस अड्डे की तरफ निकल पड़ा।

आज कुछ भी हो मुझे 21 साल की चकोर की हाथों की हथकड़ियों, बुधिराम के अपने सपने को बेचने और मिन्नी की बदहवास हालत का पता लगाना था किसी भी हालत में। मैं खुद एक बाप था, खुद को बुधिराम की जगह रख कर सोचता तो स्टेरिंग व्हील्स को पकड़े मेरे हाथ कांप उठते, ऐसा लगता जैसे किसी ने मुझे बर्फ की सिल्ली पर घंटों से बैठा रखा है, चेतन अवचेतन मन एकदम सुन्न हो जाता। मैंने खुद के अंदर के बैठे डरपोक, असुरक्षित पिता को फटकार लगायी और मन को साध कर एक्सेलरेटर पर अपने पैरों और स्टेरिंग पर अपने हाथों की पकड़ को मजबूत किया। जैसे ही मेरी गाड़ी ने बस अड्डे के अंदर प्रवेश किया मुझे बुधिराम लखनऊ जाने वाली बस में चढ़ता दिख गया, शायद भगवान भी आज इस गुत्थी को सुलझाने में मेरे साथ था, वरना इतनी अँधेरी तूफानी रात में इतने बड़े बस अड्डे में एक दुबले पतले से इंसान को ढूढ़ना असंभव था। चूँकि हमारा क़स्बा छोटा था सो सब मुझे पहचानते थे, मेरी गाड़ी रुकते ही किसी ने लपक कर मुझसे चाभी लेकर मेरी जीप को साइड में पार्क कर दिया, मैं सबके नमस्कारों का जवाब देता रास्ता बनाता सीधा उसी बस में चढ़ गया जिसमें बुधिराम चढ़ा था।

"बुधिराम तू कहां चोरी से भागा जा रहा है ? चल उतर नीचे, मुझे कुछ बातें करनी है" लेकिन बुधिराम के चेहरे पर वही शून्य सवार, मुझे ऐसे देखा मानो मुझे जानता ही नहीं। "चल उतर न तुझे तेरे पैसे दे देता हूं तू बस खाली पन्नों पर अपने सही कर दे"

"अच्छा ज़मीन का दाम तेरा मुँह माँगा, अब उतर न भाई नीचे"

"अच्छा चल घर चलें, तेरी भाभी ने लड्डू बनाये थे चकोर को बड़े पसंद हैं"

अब उन शून्य को निहारती आँखों में शून्यता के साथ आंसू के बूंद चमक उठे। मैं अब और सहन नहीं कर सकता था, मैंने उसके पैर पकड़ लिए "बुधिराम अपनी चकोर के लिए मेरी मिन्नी के लिए, तुझे भगवान का वास्ता कुछ तो बोल भाई चकोर के साथ हुआ क्या है ?"

"जाने दीजिये वकील साहब, गरीब की लड़की का क्या है। उसका गरीब पिता जिन्दा कुछ न करेगा, हाँ ईश्वर मिन्नी के भाग्य अच्छे करे, उसे अकेले कहीं बाहर जाने न दीजिएगा। रही आपकी बात तो आप जाकर उस बड़े सेठ का केस लड़िए और चढ़वा दीजिए मेरी फूल सी बच्ची को फांसी, मैं बूढ़ा उसकी किस्मत को रो लूंगा कि क्यों गरीब घर में जन्मी, सोचूंगा उसे विदा कर दिया है बस

उसका जोड़ा लाल नहीं सफ़ेद....." इतना कहते ही बुधिराम छाती पीट कर रोने लगा, शायद इतने दिनों में वह पहली बार रोया था। मेरे कंधे से लगकर जैसे कोई 5 साल का बच्चा सिसक रहा हो, तड़प रहा हो। उसका रोना इतना हृदय विदारक था कि आस पास बैठे लोगों की भी आँखें नम हो गयी थीं।

मैंने रो रो कर अधमरे हो चुके बुधिराम को लोगों की सहायता से जीप में डाला और वापस गांव की ओर चल पड़ा। रास्ते में जब तब बुधिराम चकोर का नाम लेकर सिसक उठता। मैंने जीप एक ढाबे के पास रोकी और बुधिराम को उतारा। उसको पानी दिया, जैसे ही उसने दम साधा मैंने उसपर प्रश्नों की बौछार कर दी।

"चकोर को क्या हुआ ?"

"वह अभी कहां है?"

"उसने किया क्या है जो उसे गिरफ्तार कर लिया गया है?"

"तू रात के इस वक्त कहां जा रहा था ?"

"तुझे जमीन बेचने की क्या नौबत आ पड़ी?"

"देख तू कुछ बोलेगा तब तो तेरी कुछ मदद कर सकूँगा"

आखिरकार को मैं फट पड़ा।

"इन सबसे मेरी बेटी मिन्नी का क्या सम्बन्ध है? मैं तेरे आगे हाथ जोड़ता हूँ बुधिराम, मुझसे मिन्नी की ये हालत देखी नहीं जाती। सोते-सोते चीखने लगती है कि चकोर को बचा लो पापा, उसने कुछ गलत नहीं किया, मुझे छोड़ो जाने दो हमें , तू खुद एक पिता है क्या मेरा दुःख नहीं समझ पा रहा, मैं ऐसे अपनी बेटी को पागल होता नहीं देख सकता। कुछ तो बोल बुधिराम कुछ तो बोल" कहकर मैं उसकी तरफ से मुँह घुमाकर अपने आंसुओं को रोकने की कोशिश करने लगा। आखिरकार को मैं शहर का जाना माना क्रिमिनल लॉयर था। ऐसे बुधिराम की तरह कोई लाचार पिता थोड़ी ही न जो सबके सामने रो पड़ता।

"अपनी बच्ची को बचाने के लिए वकील साहब"

बुधिराम ने कहना जारी रखा।

"हाँ अपनी बच्ची को बचाने के लिए। वह जमीन मैंने 15 सालों से उसके लिए ही तो बचा रखी थी कि उसको बेच कर आये पैसों से मेरी बिटिया डॉक्टर बनेगी या उसका छोटा सा क्लिनिक खुलवाऊंगा ताकि हमारे गांव में कोई चिकित्सा के अभाव में न मरे। आपको तो याद होगा शोभा तो 3 साल की चकोर को मेरी गोद में डालकर भगवान के घर चली गयी थी। तबसे इस लड़की को मैंने अपने सीने से लगा कर रखा, बड़ा किया। जब बड़ी होकर ये पाँव-पाँव चलने लगी तो ऐसा लगता था मानों जिंदगी शोभा के जाने के बाद भी फिर से ढर्रे पर आने लगी है। इसने कम उम्र में ही स्कूल जाना शुरू किया तो मुझे लगा अच्छा है मेरे भी मन से इसके अकेले रहने का डर जाता रहेगा। 8 साल की होते-होते इसने मुझे अपना फैसला सुना दिया कि बड़े होकर डॉक्टरनी बनेगी ताकि कोई और बच्चा बिना अम्मा के न रह जाये। इसकी बातें सुनकर मैं घंटों हँसता और सोचता ये कहा मुझ गरीब के घर आ जन्मी। अपनी माँ की तरह गोरी चिट्टी समझदार कैसे मुझ जैसे 10वीं पास काले कलूटे बाप से पल सकेगी, अरी शोभा तू जाती-जाती कौन मुसीबत में फंसा गयी रे।"

"साहब, आपको 2012 का वह जाड़ा याद है जब दिल्ली में एक बेटी के साथ कुकर्म करके उसे सड़क पर फैंक दिया था। वह भी मेरी चकोर की तरह डॉक्टरनी ही बनना चाहती थी, उस रात मैं सो न सका, पूरी रात चकोर को सीने से लगाए पड़ा रहा। सुबह होते ही उसको कह दिया के "देख, बिटिया डॉक्टरनी फैक्टरनी बनने का कोनो जरूरत नाहीं, एही रहो हमरे पास और होम साइंस पढ़ो, तोहके तुहार घर का करि हम गंगा नाहाबे।"

देखता हूँ कि सपना टूटने का सुनकर वह रो नहीं रही बल्कि मुस्कुरा रही "बापू जो तू है नाइ वो बनने का कोशिश करत है तो हमें बड़ा मज़ा आवे है। देख हमको तूने आज तातो कुछ मना न किया तो पढ़ना तो हमार हक़ है वो क्या छीनेगा, चाय चढ़ा दी है, मेरे लिए नास्ता बना स्कूल की देरी हो रही" ऐसा कहकर मेरी 12 साल की चकोर ने अपना फैसला सुना दिया कि अब डॉक्टर नहीं क्रिमिनल लॉयर बनेगी। अपने त्रिपाठी चाचा की तरह और कल रात जैसे हुए अपराधों में दोषियों को सजा दिलवाएगी"

सच है, लड़कियां कितनी जल्दी बड़ी हो जाती हैं। जिस अपराध को सुनकर मैं कांप गया था वह जान कर मेरी बिटिया ने अपना सपना ही बदल लिया। खैर समय बीतने लगा , मेरे मन का भय न गया, मैं चकोर के पीछे पीछे उसके स्कूल तक जाता और छुट्टी में बहाने से उसे लेने जा पहुँचता। कारखाने से 4-5 चक्कर घर के लगाता रहता और शाम होते ही घर में घुसकर अपनी लाडो को दुबका कर बैठ जाता।

मेरी चकोर और आपकी मिन्नी दोनों साथ-साथ स्कूल आने जाने लगीं तो मेरी चिंता कुछ कम हुई थी। सब कुछ अच्छा चल रहा था कि फिर से चेन्नई और हाथरस में हुई हैवानियत ने मुझे दहला दिया। बेटी के प्यार में मजबूर मैंने कारखाने में एक छोटी सी कटार बनायीं, उसपर खूब धार चढ़ा कर बिटिया को माँ की आखिरी निशानी बता कर दे दी। माँ की निशानी पाकर बिटिया जो खुश हुई " बापू इतने सालों से क्यों न दिया। अब तो 20 की हो गयी हूँ, बालिग हूँ दे देता, देख मैं कैसी लग रही कटारी के साथ एकदम झाँसी की रानी या सिखणी पंजाब की हाहाः" ।

अगले दिन चकोर और मिन्नी एक साथ कॉलेज गईं। लेकिन वापस केवल मिन्नी आयी , चकोर की खबर लेने के लिए दरोगा साहब ने सीधे पुलिस स्टेशन बुलाया और बताया की मेरी बिटिया ने खून करने की कोशिश की है शहर के सबसे बड़े सेठ के बेटे की। ये सब क्यों हुआ, कैसे हुआ कुछ पता नहीं। न ही वे लोग चकोर से मिलने देते हैं, अभी उसको लखनऊ के महिला थाना में भेज दिया है।

इतना सुनते ही मैंने बुधिराम को जीप में बैठाया और सीधा अपने घर की तरफ जीप दौड़ा दी। घर पहुंच कर बुधिराम को लगभग घसीटता हुआ मैं मिन्नी के कमरे में लेकर आया जहाँ मिन्नी बुत बनी बैठी थी। बुधिराम को सामने देखते ही मिन्नी उसके पैरों में गिर कर जोर-जोर से रोने लगी और माफ़ी मांगने लगी जिसपर बुधिराम क्या कहे क्या न कहे। मैंने मिन्नी को कंधो से पकड़ा और जोर देते हुए पूछा " मिन्नी उस दिन तेरे और चकोर के साथ क्या हुआ था? देख अगर तू नहीं बताएगी तो मैं चकोर को नहीं बचा पाउँगा। बोल मिन्नी सच बता दे मेरी बच्ची, बोल डर मत तेरा पिता अभी जिन्दा है, तुझे कोई कुछ नहीं कर सकेगा"

"बात 31 दिसम्बर की है, मैं और चकोर पगडंडियों वाला रास्ता पकड़ कर कॉलेज जा रहे थे तभी विशाल अपनी बड़ी सी गाड़ी से हमारे सामने आ गया "

"विशाल कौन? उस सेठ का बेटा?"

"हाँ वही। आपकी और दादू की बेवजह की रोक टोक से मैं बागी होकर विशाल से दोस्ती करने की गलती कर बैठी। अक्सर चकोर को कॉलेज के गेट पर छोड़ कर मैं विशाल के साथ घूमने मौज मस्ती करने चली जाती। चकोर को धमका रखा था कि घर पर कुछ न कहे ताकि दादू के सामने मेरी सीधी साधी छवि धूमिल न हो।

31 दिसंबर को मैं और चकोर हंसती बातें करती कॉलेज की ओर बढ़ रही थीं। रास्ते में चकोर ने अपनी माँ की आखिरी निशानी बुधिराम चाचा की दी कटार निकल कर मुझे दिखाई। एकदम से विशाल के आने से मैंने वह कटार बातों - बातों में अपने बैग के ऊपर वाले चैन में डाल दी और विशाल से बातें करने लग गयी। विशाल ने मुझे और चकोर को नए साल की पार्टी में उसके फार्म हाउस चलने को कहा जिसपर चकोर ने सीधा मना कर दिया। वह वैसे भी उसे पसंद नहीं करती थी, मैंने अपना बैग चकोर को दे दिया और जैसे ही गाड़ी में बैठने को हुई देखती हूँ कि अंदर 3 लोग और बैठे हैं और सभी से शराब और सिगरेट की बू आ रही है। चकोर ने भी ये सब देख लिया था, उसने मेरा हाथ कस कर पकड़ लिया और आँखों ही आँखों में मुझसे न जाने की गुहार लगाने लगी। जैसे ही मैंने जाने से मना करने के बाद चकोर की ओर मुँह किया, पीछे से किसी ने मेरे बाल जोर से पकड़ कर खींचे "अरे ऐसे कैसे मैडम, हमारा न्यू ईयर क्यों ख़राब कर रही" अब ये हालात थे कि चकोर ने मेरा हाथ पकड़ रखा था मगर वे चारों लड़के मुझे कार के अंदर खिंच रहे थे। धीरे-धीरे मेरी और चकोर की पकड़ ढीली पड़ने लगी थी। एकदम ही चकोर ने मेरा एक हाथ छोड़ा और दूसरे हाथ से बैग में कुछ टटोलने लगी, अगले ही पल मेरे मुँह पर खून के छींटे पड़े। चकोर ने उन चारों में से एक लड़के की चारों उंगलिया काट दी थी, ये देख कर सभी डर गए और एकदम से मुझे छोड़ दिया, छूटते ही मैं और चकोर बस्ता छोड़ कर भागने ही वाले थे विशाल और आगे बैठे लड़के ने हमारा रास्ता रोक लिया और चकोर को बालों से घसीट लिया।

"छोड़ दो चकोर को, जाने दो हमें" मैं चींखी, रोई। मगर वे हँसते रहे। चकोर के पेट में एक घुसा मारा और उसके चेहरे पर थप्पड़ों की बरसात कर दी और उसका सिर कार की बोनट पर दे मारा। जब वह बेहोश हो गयी तो वे दोनों मेरी ओर लपके, लेकिन ये क्या चकोर तो बस बेहोश होने का नाटक कर रही थी, उसने पीछे से आकर विशाल के ऊपर कटार से वार किया जो एकदम से उसकी गर्दन को होता उसके कंधों पर जा रुका और वह वहीं जमीन पर पड़ा तड़पने लगा। अब ये देख उसके दोस्तों का नशा फुर्र हो गया उन्होंने हमें देख लेने की धमकी देते हुए विशाल को गाड़ी में डाला और वहाँ से चलते बने। यहाँ मेरे और चकोर के कपड़े खून से सन चुके थे, हमने कॉलेज की तरफ न जाकर दूसरे गांव भाग जाने की बात

सोची लेकिन बीच रास्ते में ही चकोर को पुलिस ने पकड़ लिया और मैंने छुप कर अपने को बचा लिया।

ये सब सुनकर मैंने मिन्नी को मारने के लिए जैसे ही हाथ उठाया ही था कि बुधिराम ने आकर मुझे रोक दिया।

"इ क्या करत रहे हैं त्रिपाठी भैया , अब का बच्ची को सच बोलन खातिर मारीबो ?"

मैं बुधिराम के पैरों में गिर पड़ा "मुझे माफ़ कर दो बुधिराम, तेरे दिए संस्कार मेरे परवरिश पर कैसे भारी पड़े देख न , तुझे बेटी को ज्यादा पढ़ने के लिए ताने देते हुए हम ये भूल गए कि हमारी बच्ची का भविष्य कैसे दिन पर दिन डूबता जा रहा है। यही होता है हम अक्सर दूसरों की जिंदगी में घुसकर उनमें बुराइयां निकालने में इतना व्यस्त हो जाते हैं कि अपने जीवन की कमियों को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। कितना अच्छा होता कि तेरी बेटी के सपनों की उड़ान को टोकने के पहले मैंने अपनी बेटी के बागी परों को कतर दिया होता तो आज तेरी चकोर तेरे पास सुरक्षित होती, न कि इस मिन्नी के पापों की सजा भुगत रही होती। चल भाई इसी समय उठ, हम दोनों लखनऊ चलते हैं, तेरी चकोर ने मेरी मिन्नी को बचा कर जो एहसान इस पिता पर किया है न" कहते-कहते जाने क्यों अब मैं शहर का प्रख्यात क्रिमिनल लॉयर न रहकर बस एक लाचार पिता बन कर फूट फूट कर रोने लगा।

बुधिराम और मैं दोनों शांत बैठे हैं, लेकिन बुधिराम का चेहरा गर्व से दमक रहा है और मैं समझने की कोशिश कर रहा हूँ कि मुझे कभी ताता कह कर बुलाने वाली वह दो चोटियां बनाने वाली गोल मटोल चकोर कब ऐसी चट्टान जैसे मजबूत इरादों वाली हो गयी।

"प्रणाम चाचा, मिन्नी ठीक तो है न, उसे बड़ी चोटें तो नहीं आयी है न ?"

" हाँ? हाँ नहीं मतलब नहीं, मिन्नी ठीक है। घर पर अपनी माँ के साथ है। तुम्हें कुछ कहना नहीं है अपनी सफाई में ? देखो मैं मदद के लिए आया हूँ मुझसे कुछ छुपाना नहीं चकोर।"

चकोर ने मुझे दुबारा नहीं देखा, बस अपने पिता को देखती रही और एकाएक कहने लगी।

" बापू वह गांव वाली जमीन याद है जो तूने मेरी शादी के लिए रख छोड़ी थी। मुझे याद है कैसे मेरे 10वीं में पूरा जिला टॉप करने पर तूने पूरे गांव का मुँह मीठा करवाया था। जब त्रिपाठी चाचा ने कहा कि अब चकोर को ब्याह दे और जमीन मुझे बेच दे, मैं अच्छे पैसे दे दूंगा, तो तूने कहा था

" अब इ जमीन न बेचब भैया, हमार चकोर डॉक्टरनी बने के सपना देख रहिस , ऊका फीस अउर बाकि खर्चा कहा से देब। पहिले सोचा रहा कि लड़की ब्याह दे अउर गंगा नाहा लेकिन मालिक इ डॉक्टरनी बने ते पूरा गांव का भला होये ।"

"अब बापू तूने खुद ही सोच समझ कर फैसला लिया था वह जमीन को बेच कर पैसा शादी में लगाने से अच्छा है कि मुझे पढ़ा लिखा कर काबिल बनाएगा। आज भी खुद ही फैसला ले कि वह दरिंदे मुझे मार कर फेंक देते तो जमीन बेच कर मेरा इलाज करवाना अच्छा होता या आज सच के लिए मुक़दमा दाखिल करके मेरे लिए केस लड़ना अच्छा है? बापू न तूने मुझे कटार देकर कोई गलती की और न ही मैंने उसका सही इस्तेमाल करके। मैंने कोई खून नहीं किया है बल्कि अपना और मिन्नी का बचाव किया है। और भारत की न्याय प्रणाली पर मुझे पूरा विश्वास है। आत्मसुरक्षा कोई जुर्म नहीं है। अगर तुझे नहीं लगता कि मैंने कुछ गलत किया है बापू तो मैं पूरी दुनिया से लड़कर इस जेल से बाहर आउंगी और दिखा दूंगी कि मेरे पिता की परवरिश में कभी कोई खोट नहीं था, न है।

"मिलने का समय ख़तम हुआ "

हम दोनों बाहर आ गए। बेटी की बातों से भावुक बुधिराम कहने लगा कि " भैया कितना अच्छा हो न सब बिटियन में साक्षात दुर्गा निवासे जईसे हमार चकोर में। काट दे उन दरिंदों का हाथ जो उनका आँचल छीने खातिर उठे। लेकिन भैया अब का होवे, ऊ बड़ा आदमियन से कैसे लड़इहे भैया हम गरीब बाप बेटी। "

" देख बुधिराम तेरी बेटी का केस लखनऊ का सबसे बड़ा क्रिमिनल लॉयर लड़ेगा जो खुद भी एक बेटी का पिता है। "

"लेकिन आप तो ऊ सेठ जी का केस न भैया न उतना फीस हम तेन दे सकब "

"बुधिराम मुझे और लज़्ज़ित न कर, मैं ये केस लडूंगा और तेरी चकोर ससम्मान तेरे पास होगी, लेकिन फीस तो मैं लूँगा। अब चकोर की उड़ान को रोकना नहीं, उसे उड़ने देना खुले आसमान में, इतना ऊँचा इतना ऊँचे कि उसे देख कर बाकी सारी चकोर और मिन्नी ये समझ लें, आत्मरक्षा जुर्म नहीं, हर लड़की का हक़ है।" ❑

जलवायु परिवर्तन : अनुकूल से प्रतिकूल

✍ (अंग्रेजी) नैना जोशी
(हिन्दी) : रितेश मोहन जोशी
उप महाप्रबंधक (भूभौतिकी)
के जी बेसिन परियोजना, काकीनाड़ा

पृथ्वी से परे एक जगह है, इतनी दूर कि हम कल्पना भी नहीं कर सकते। यह एक जगह थी जिसे बादलों का शहर कहा जाता था। वर्ष था 0000 (पृथ्वी के कैलेंडर के अनुसार) जब भगवान नाम के एक व्यक्ति ने अपने स्वर्गदूतों की मदद से एक सुंदर एवम शानदार जगह बनाई, उसने इसका नाम पृथ्वी रखा। स्वर्गदूतों और भगवान ने पृथ्वी को उसके मूल तत्वों जैसे जल, वायु, अग्नि और स्वयं पृथ्वी का उपयोग करके बनाया था। इसकी संरचना के लिए काफी तर्क-वितर्क किये गए और काफी गहन चर्चा भी की गयी। इस चर्चा के परिणामस्वरूप पृथ्वी का प्रारूप तैयार हुआ। भगवान ने कहा, "पृथ्वी में 71% पानी होना चाहिए और शेष 29% ज़मीन, पहाड़, रेगिस्तान जंगल और बाकी सब कुछ होगा"। स्वर्गदूतों में से एक ने उत्तर दिया, "क्या महान विचार है, अब मानव जाति के पास पानी की कमी नहीं होगी।" भगवान ने अपनी ठुड्डी पर हाथ फेरा और कहा, "विचार उत्तम हैं किन्तु नहीं, सारा पानी नमकीन कर दो! मानवजाति को पता होना चाहिए कि कड़ी मेहनत क्या होती है, सिर्फ नदियों, पोखरों, झील और तालाबों का पानी नमकीन मत करना। फ़रिश्ते भ्रमित थे लेकिन बस सिर हिलाया। उन्हें भगवान और बाकी के स्वर्गदूतों द्वारा दिए गए हर छोटे विवरण को सुनिश्चित करने में महीनों लग गए और एक बार पूरा खाका तैयार हो जाने के बाद, वे सभी एक जगह पर एक साथ मिले कि किस तरह अपनी शक्तियों का प्रयोग करके एक गोलाकार अंडाकार मनुष्य योनि के रहने योग्य जगह बनायीं जायें। पृथ्वी को बनाने के लिए, एक-एक करके उन्होंने अपनी शक्तियों का उपयोग किया। विभिन्न स्वर्गदूतों की शक्तियाँ भी विभिन्न थीं और इन विभिन्न शक्तियों का समावेश कुछ इस तरह हुआ कि एक गोल अंडाकार पृथ्वी का उद्गम हुआ।

सैकड़ों और हजारों शताब्दियां बीत गईं और यह साल था 2022 का। प्रतिदिन की तरह भगवान आज भी स्वयं पृथ्वी से सम्बंधित दैनिक आंकड़ों की जांच कर रहे थे। ये आंकड़े एक स्वर्गदूत एकत्रित करता था। प्रतिदिन एक निश्चित समय पर इस स्वर्गदूत का टेलिपोर्ट के माध्यम से पृथ्वी पर जाना, सूचनाएं और आंकड़े एकत्रित करना, उन सूचनाओं और आंकड़ों का अध्ययन करना और उनका सार भगवान् को बताना, "सूचना अवतरण समूह" की ज़िन्दगी का अभिन्न अंग बन चुका था। एक दिन पृथ्वी से मिली जानकारी का विश्लेषण करते हुए, भगवान ने कुछ ऐसा देखा जिस कारण से उनकी जिज्ञासा और बढ़ गयी। ग्रीनहाउस गैस नामक पदार्थ की संख्या वर्षों से बढ़ रही थी और अब इसके गलत प्रभाव से कई स्थानों पर बाढ़, सूखा, स्वच्छ पानी की हानि, भोजन की हानि आदि बड़ी-बड़ी हानियाँ होनी शुरू हो गयी थी। भगवान अब बहुत चिंतित थे और इसलिए उन्होंने अपने कुछ स्वर्गदूतों को अपने कार्यालय में बुलाया और उनसे पूछा कि वास्तव में ये ग्रीनहाउस गैसें क्या हैं। स्वर्गदूतों ने एक-दूसरे को देखा और उनमें से एक ने खड़े होकर कहा, "भगवान, ग्रीनहाउस गैसें क्लोरो-फ्लोरो-कार्बन, कार्बन डाइ-ऑक्साइड, मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड जैसी गैसें हैं, जो तथाकथित विकास का एक द्वि-उत्पाद है"। "भगवान, ग्रीनहाउस गैसें एक बड़ा खतरा बन रही हैं" एक और स्वर्गदूत ने कहा। तत्पश्चात एक अन्य स्वर्गदूत ने कहा, "ये सिर्फ गैसें हैं लेकिन ऐसा इसलिए है क्योंकि मानव अपने दैनिक जीवन में बहुत सी चीजों का उपयोग करता है जो इन गैसों को छोड़ती है। छोड़े जाने पर गैसें आकाश में जाती हैं और पृथ्वी के चारों ओर एक प्रकार का आवरण बनाती हैं, इसलिए जब भी सूर्य की गर्मी आती है तो वह पृथ्वी से अपवर्तित होने की कोशिश करती है और जब वह पृथ्वी से बचने की कोशिश करती है तो ग्रीनहाउस गैसें उसे फंसा लेती हैं और पृथ्वी का तापमान बढ़ जाता है। यह प्रक्रिया लगातार चल रही है। इस तरह पृथ्वी ग्रह के तापमान का लगातार बढ़ना अच्छा नहीं है। इस वजह से पृथ्वी पर जलवायु बदल रही है। जैसे जुरासिक काल के दौरान हुए जलवायु परिवर्तन के कारण डायनासोर विलुप्त हो गए, उसी तरह इस बार धरती खंड से पूरी मानवता का सफाया होने का खतरा है"।

भगवान बहुत चिंतित थे, वे अपने आसन से उठकर चहल-कदमी करने लगे और कुछ क्षणों की शांति के पश्चात बोले, "तो आप विद्वान गण मुझे बता रहे हैं कि जिन मनुष्यों को हमने दिमाग दिया है, वह अपने भौतिक सुखों के साधनों में इतना लिप्त हो चुके हैं कि उन्हें अपने आने वाले भविष्य और आने वाली पीढ़ी की कोई चिंता नहीं है? उनके द्वारा विकसित किये हुए संसाधन गैसें छोड़ती

हैं जो पृथ्वी को प्रभावित करती हैं और शायद भविष्य में एक अविश्वसनीय रूप धारण कर लें, वे इस सन्दर्भ में सब कुछ जानते हैं पर इसके निवारण के लिए कुछ ठोस कदम नहीं उठा रहे हैं। क्या तुम्हारे कथन का यही तात्पर्य है? मेरे द्वारा बनाया गया मनुष्य इतना भी अज्ञानी नहीं हो सकता जो अपने हित-अहित को तोल न सके, मुझे नहीं लगता, कदापि नहीं"। एक को छोड़कर सभी स्वर्गदूतों ने एक दूसरे की ओर देखा और कहा, "बिल्कुल!", एक युवा स्वर्गदूत ने अपने अत्यंत नरम और मधुर स्वर में कहा, "ऐसा नहीं है की सभी इसमें लिप्त हैं, वास्तविकता में, कुछ इंसान हैं, कुछ संगठन हैं, जो मदद करने की कोशिश कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, संयुक्त राष्ट्र, कुछ गैर-सरकारी संगठन, और कुछ पर्यावण के प्रति प्रतिबद्ध राष्ट्र जो यूरोप में हैं। वे इस समस्या को समझते हैं और इसके निदान करने के पक्ष में हैं, वही कुछ और लोग या संगठन हैं जो एक संतुलन का प्रस्ताव रखते हैं, ऐसा संतुलन जिसमें इन ज़हरीली गैसों का समावेश भी उचित मात्रा में रहे और मनुष्य अपने भौतिक सुखों से भी वंचित न रहे। हालांकि ये लोग या संगठन पुरजोर कोशिश कर रहे हैं पर यह समस्या इतनी छोटी मोटी नहीं है। इस समस्या का निदान तभी संभव है जब हर कोई अपने स्तर पर कोशिश करे। अगर आज्ञा हो तो मेरे पास कुछ विचार हैं"। भगवान यह सोचकर हैरान रह गए कि इतनी कम उम्र में इस स्वर्गदूत को यह सब कैसे पता चला? उसने देवदूत से उसके विचारों के बारे में पूछा, और देवदूत ने उत्तर दिया-मैं सोच रहा था कि क्या होगा यदि हम प्रत्येक राष्ट्र के प्रमुख से संपर्क करें और उन्हें मनुष्यों के लिए कुछ सरल नियम स्थापित करने के लिए कहें। यदि मनुष्य इन नियमों का पालन करते हैं, तो वे एक छोटा सा कमीशन प्राप्त करते हैं और उन्हें यह एहसास कराते हैं कि यदि वे एक से अधिक नियमों का पालन करते हैं या दिन में एक से अधिक बार एक नियम का पालन करते हैं तो यह कमीशन बढ़ जाता है। महीने के अंत में उनके बैंक खाते में कुछ पैसा जमा हो जाता है, उन नियमों का पालन करने के लिए, जो उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक होने के कारण वैसे भी निभानी थी"। भगवान ने कुछ देर सोचा और कहा, "यह वास्तव में एक अच्छा विचार है लेकिन मेरे द्वारा बनाये गए इंसान दिमागदार हैं। वे लोग इस नियम का पालन करेंगे जिन्हें पैसों की आवश्यकता है, जिन्हें नहीं है वे क्यों करेंगे? किसी भी देश की नियम प्रणाली को देख लो, नियम बनते हैं, टूटते हैं पुनः बनते हैं, पुनः टूटते हैं और ये धारावाहिक चलता रहता है। तो मेरे विचार से, यह एक अच्छा प्रस्ताव नहीं है"। फिर उन्होंने कुछ सोचकर कहा, "क्या होगा यदि मनुष्य को उसकी पसंदीदा वस्तु / वस्तुओं (जो कार्बन-पदचिह्नों पर नियमों का पालन नहीं करते हैं) से वंचित रखा जाये"?

सभी स्वर्गदूतों ने कहा!, "यह क्या हो सकता है"? जब सभी अपना दिमाग खुजला रहे थे, वही युवा स्वर्गदूत अपनी सीट से उठा, अपने दूधिया सफेद पंखों के साथ हल्का फड़फड़ाया और कहा, "हे भगवान! इन दिनों, एक चीज है, जिसके बिना धरती पर कोई भी व्यक्ति नहीं रह सकता है, वह है उसका मोबाइल फोन। मोबाइल फ़ोन एक व्यक्तिगत उपयोग की वस्तु है। यह वस्तु इतनी कारगर है कि इसने न जाने कितने उपयोग की वस्तुओं को धराशायी कर दिया है। होने को तो मोबाइल संचार का एक माध्यम है पर पिछले कुछ दशकों में इसके मायने बदल गए हैं। आज ये सिर्फ संचार प्रणाली का अभिन्न अंग ही नहीं है अपितु मोबाइल ने दैनिक जीवन में बहुत सी चीजों को बदल दिया है, चाहे वह अलार्म घड़ी हो, कलाई घड़ी हो, कैमरा हो, डिजिटल डायरी हो, पेजर हो, वीडियो कैमरा हो, गेमिंग कंसोल हो, ई-रीडर, दर्पण आदि आदि। मोबाइल हैंडसेट एक ऐसी चीज है जिसे कोई नहीं छोड़ना चाहेगा। अगर हम किसी तरह मानव गण की इस कमजोरी का किसी तरह से लाभ उठा सके तो समझिए इस कार्य को पूर्णता प्रदान करने से कोई नहीं रोक पायेगा"। भगवान प्रभावित हुए, उन्होंने अपने मंत्री-परिषद को यह काम दिया और वे एक सरल समाधान लेकर आए। अगले नए साल से हर इंसान के मोबाइल फोन की वैधता सिर्फ तीन माह के लिए ही होगी। इससे न सिर्फ 'कार्बन फुटप्रिंट्स' कम करने में सहायता मिलेगी अपितु 'कार्बन क्रेडिट' भी अर्जित किये जा सकते हैं। कुछ निर्धारित नियमों का पालन करके कार्बन क्रेडिट अर्जित किया जा सकता है और इन कार्बन क्रेडिट का उपयोग मोबाइल फोन की वैधता बढ़ाने के लिए किया जा सकता है। मंत्री-परिषद के पास इस सशक्त / जल-रोधक समाधान बनाने के लिए कई जाँच और संतुलन का समायोजन भी था, जैसे यदि कोई व्यक्ति नियम का पालन नहीं करता है और तीन महीने के बाद एक नया फोन खरीदता है, तो उसकी वैधता भी केवल 3 माह के लिए प्राप्त कर सकता है, उसके बाद उसे निश्चित तौर पर इन नियमों का पालन करना ही होगा।

अगले दिन ही भगवान और उनके स्वर्गदूत आम लोगों के वेश में पृथ्वी पर गए, उन्होंने हर देश के मुखिया से उनके कार्यालय में भेंट की और उन्हें पूरी योजना बतायी। अधिकांश प्रमुख योजना के लिए सहमत हुए, वे ग्रीनहाउस गैसों के बारे में बहुत चिंतित थे और सभी ने "मोबाइल वैधता विस्तार परियोजना" को अपने देश के संविधान में संशोधन करके लागू करने का फैसला किया। कुछ राष्ट्रों के मुखिया शुरू में अनिच्छुक थे लेकिन फिर उन्हें रास्ते पर लाने के लिए भगवान और स्वर्गदूत को कुछ चालें चलनी पड़ीं। योजना के क्रियान्वयन की तिथि निकट थी, भगवान और स्वर्गदूत

वापस अपने मेघों के शहर और अपने घरों में चले गए और झटपट निद्रा देवी की गोद में समां गये।

नीति को लागू हुए एक महीना हो गया था और दैनिक रिपोर्टों में ग्रीनहाउस गैसों में कमी के कोई संकेत नहीं दिखाई दे रहे थे। आगबबूला हुए भगवान ने सभी स्वर्गदूत, मंत्री-परिषद और सांख्यिकी विशेषज्ञों को बुलाया और उनसे पूछा कि क्या हो रहा है? स्वर्गदूतों ने कहा, "भगवान, परिवर्तन को अपनाना बहुत मुश्किल है, अधिक पेड़ लगाने, कम कागज का उपयोग करने, उपयोग में नहीं होने पर उपकरणों को बंद करने, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग, आदि की आदत मनुष्यगण को नहीं है। वास्तविकता में प्रगति देखने के लिए एक महीना बहुत निम्न है। यदि तीन माह तक कोई प्रगति दृष्टिगोचर नहीं होती है तो फिर और तीन माह तक प्रतीक्षा करेंगे। हालांकि मुझे अटल विस्वास है कि, प्रगति शुरुआत में बहुत धीमी होगी लेकिन निश्चित होगी"। युवा स्वर्गदूत ने अपने दूध से सफ़ेद पंखो को फड़फड़ा के कहा, "मेरे द्वारा किये गए सिमुलेशन मॉडल भी मुझे ये ही बता रहे हैं।" भगवान ने बात मान ली और कहा "ठीक है, हम दो महीनों के पश्चात इस विषय में पुनः संज्ञान लेंगे और तब इसकी व्याख्या करेंगे। तब तक मानव निर्मित इन चमकीले उपग्रह, जो हमारे मेघों के शहर के आस पास घूम रहे हैं, उनका अवलोकन करें।

दो माह पश्चात, स्तिथि बदलने लगीं। जब मनुष्य अपने पसंदीदा गैजेट (मोबाइल फोन) से रहित हो गए, तो उन्होंने कार्बन फुटप्रिंट को कम करने वाली चीजों का पालन करना शुरू कर दिया। छह महीने के अंत तक, इस प्रक्रिया ने गति पकड़ ली। कार्बन फुटप्रिंट्स की दैनिक संख्या अभी भी बहुत अच्छी नहीं थी, लेकिन स्वर्गदूत द्वारा बनाये गये सिमुलेशन मॉडल के लेखाचित्र का अनुसरण कर रहा था।

भगवान खुश थे, वे खुश थे कि उन्होंने जो ग्रह बनाया, और उनके द्वारा बनाए गए मानवगण एक-दूसरे के विरोध में नहीं हैं। वे चाहते थे कि दोनों सद्भाव से रहें और वे ऐसा होते देख रहे थे। भगवान ने सबके साथ शाम की चाय और कुछ चुनिंदा व्यंजनों के साथ इस सफलता का उत्सव मनाया। युवा स्वर्गदूत ने इस बार आनंदित होकर फिर अपने दूध जैसे सफ़ेद पंख फड़फड़ाये। ❑

महाभारत कैसे बना

✍**दिप्लब मोतीराज**
कनिष्ठ सहायक – II,
सामग्री विभाग, दुलियाजान

महाभारत के लेखन की कहानी बहुत ही मनोरंजक और ज्ञानवर्धक है। महर्षि पराशर के पुत्र और वेदों के सुप्रसिद्ध संयोजक व्यास जी के मन में एक दिन यह विचार जागा कि महाभारत की कथा से विश्व को परिचित कराया जाए। उन्होंने अपने विचार को मूर्त रूप देने के लिए ब्रह्मा जी से निवेदन किया, "प्रभु, मेरे मन में एक बहुत ही सुंदर रचना का उदय हुआ है, लेकिन मुझे कोई ऐसा व्यक्ति नहीं दिखाई दे रहा जिसे मैं बोलता रहूं और वह उसे लिखता रहे।"

ब्रह्मा जी ने कहा, "मुनिवर आप गणेश जी की सहायता ले सकते हैं। उनका आह्वान करें और उन्हें अपनी इच्छा बता दें।" ब्रह्मा जी की सलाह मानकर व्यास जी ने गणेश जी का आह्वान किया। उनके आने पर व्यास जी ने उनसे कहा, "महामहिम गणेश जी, मैं आपको महाभारत की कथा बोलता रहूंगा, आपसे निवेदन है कि आप प्रसन्नतापूर्वक उसे सुनकर लिखने की स्वीकृति दें।"

गणेश जी ने उत्तर दिया, "मुझे स्वीकार है, आप जैसा चाहते हैं, मैं वैसा ही करूंगा। लेकिन, शर्त है कि मेरी लेखनी रुकने का नाम नहीं लेगी। इसलिए आपको बिना झिझके और बिना रुके वह कथा बोलनी होगी। अगर आपको यह शर्त मंजूर है तो कहें, मैं इस शर्त पर महाभारत लिखूंगा।"

व्यास जी तैयार तो हो गए, परंतु उन्होंने भी अपनी रक्षा के लिए एक शर्त रख दी "मुझे आपकी शर्त मंजूर है, लेकिन जो कुछ मैं बोलता जाऊंगा, पहले आप उसका भली-भांति अर्थ समझेंगे फिर लिखेंगे।"

गणेश जी मुस्कुराए और उन्होंने व्यास जी की शर्त मान ली। महाभारत का लेखन प्रारंभ हुआ। व्यास जी ने बोलना शुरू किया और गणेश जी ने लिखना। व्यास जी अगला वाक्य सोच भी नहीं पाते थे कि गणेश जी लिख लेते थे। ऐसी दशा में व्यास जी ने नीति से काम लिया। बीच-बीच में वे काफी कठिन और उलझन भरे शब्द बोलने लगे। शर्त के अनुसार, गणेश जी जितनी देर में उन शब्दों का अर्थ समझते, व्यास जी आगे की रचना सोच लेते। इस प्रकार व्यास जी ने संपूर्ण कथा बोली और गणेश जी ने महाभारत की उस कथा को लिखा। ❑

वह सब जो छूट गया

✍ **अजय दास**
कनिष्ठ सहायक (क्लर्क-सह-कंप्यूटर ऑपरेटर)
मानव संसाधन अधिग्रहण विभाग, दुलियाजान

एक

बंद आंखों के दृश्य
खिड़की से छिटक रही किरण की त्वचा पर
स्पंदन में सारे आंसू गंवा चुकी लौ पर तिलमिलाती अग्नि के अवश हो जाने से
धुंधलाती आकृतियों की तरह ओझल होते हैं जब
छूट चुकी गली के क्षितिज पर पहरा देने वाला पहाड़
रात का आवरण त्याग चर्म पर सुर्ख झंझावात से सराबोर आसरा बनता है
रौंओं की हरियाली में छनकर
सुनहले होते बहाव का किनारा जो उकेरती है बंद आंखों में
शीशे के गिलास में भरी जा रही फीकी चाय से घुलकर
रोशनी क्षीण कर देती है शहर के दृश्य
जो पगडंडियों से भयाक्रांत कोना एक ढूंढ़ते हैं
छूटते रंगों वाले कमरे में बिस्तर की छांव का
जहां सुरक्षित है पायों की निगरानी में संदूक
संजोया है जिसमें पुराने शहर को
बंद आंखों से देखने के लिए

दो

यद्यपि पुराना शहर पुराने घर की तरह होता है
जिसे छोड़कर जाने के बाद लौटना किसी अजनबी के यहां तफरीह करने जैसा है
जो लोग मिलते हैं मेजबान
कागज के कटे, कूटों पर उकेरे गए, अजनबी चाय के प्याले गलत रखे गए मेज पर
सपनों का हिस्सा नहीं होते जिनमें फर्श और दीवारें दरवाजा बंद होने के बाद
और खिड़की खुली हुई हो तब भी
फेरे हुए कपड़ों की गंध लिए शहर ही हो जाते हैं
जो बुने हुए रेशों से जिस्म पर और फिर पूरे कमरे में
लौट आने पर साथ सोता है

तीन

रास्तों के मकड़जाल पर पर्यटनशील कोना तलाशती आंखें
कैद होती हैं सब्ज मैदान पर बिछी सुनहली चादर से
जो पौ फटते ही बह आती है पिघलकर दूर टंगे एक पहाड़ से
जिसकी त्वचा तीव्र प्रकाश के रक्स में स्याह तेज से झिलमिलाती है
आंखें निराकार परछाइयां बंद होने पर ही देख पाती हैं
क्योंकि सदी के छूट जाने के बाद आकृतियां बगैर परछाई के तराशी जाती हैं
ढके हुए संसार में अमूमन दूसरा कोई नहीं रहता
जहां सिवाय आंखों के पर्यटनशील होने की मृगतृष्णा के
जो लौटने के वायदे पूरे न किये जाने पर डेरा जमा लेती हैं रातों में–
कमरे की वास्तविकता से खिन्न। ❑

कैसे कहूँ ...?

✍ **प्रतीक बरुआ**
उप मुख्य अभियंता
कम्प्रेसर मेंटेनेंस अनुभाग
गैस प्रबंधन सेवाएं विभाग, दुलियाजान

किसी की हंसी के बदले मुस्कराहट कैसे खिलाऊँ ?
नजाने कितने ग़म सीने में दबाए रक्खा हूँ ...!
दूसरों की मशक्कत में गलतियां कैसे निकालूँ ?
खुद के गिरेबान में नजाने कितनी छुपा रहा हूँ ...!
रिश्तों के बवंडर में असलियत कैसे पहचानूँ ?
अपनों के ही धोखों से तो आज लहूलुहान पड़ा हूँ ...!
ग़लतफहमियों के परदों को नजाने कैसे गिराऊं
खुद की सलाहियत को जो कब का गवाएं बैठा हूँ ...!
दिल की तकल्लुफ को जुबां पे कैसे पहुंचाऊं ?
ख़ामोशी की गलियों में डेरा जमाए जो बैठा हूँ ...!
खाली कागज पे कैसे ज़ज़्बातों के क़ाफ़िलों को उतारूँ ?
आंसुओं के समंदर में उसे कश्ती बनाके जो छोड़ा हूँ ...!
लोग पूछते हैं इस फ़िक्र की आदत को रुक्सत कैसे करवाऊं ...
उन्हें क्या पता, बस नाम की साँसे हैं, ज़िन्दगी की आरज़ू तो कब का छोड़ चला हूँ ...!! ❑

तजुर्बा...

✍प्रतीक बरुआ
उप मुख्य अभियंता
कम्प्रेसर मेंटेनेंस अनुभाग
गैस प्रबंधन सेवाएं विभाग, दुलियाजान

इंतज़ार लम्बी मगर खूबसूरत हो ...
मुलाकात तो बस चंद पलों में क़ैद रह जाती है !

सफर लम्बा मगर यादगार हो ...
मंज़िल मिलने का जश्न तो लम्हों में निकल जाता है !

दर्द का सिलसिला इंसान के सब्र का इम्तिहान लेता है ...
आंसू तो दो पल में बोझ हल्का कर देती है !

हमारी हँसी दूसरे के मुस्कानों को इकट्ठा कर लेती है ...
तड़प की तकलीफ तो हमें निहत्था कर देती है !

लोग कहते हैं दोस्ती का ज़ोर तूफानों को रोक लेता है ...
पर मतलब पे जब आये बात, तो खंजर भी भोंक देता है !

किसी की शराफत अक्सर हालात की अच्छाई बयां कर जाती है ...
सच्चाई छुपानी हो तो बात बदसलूकी पे उतर आती है !

दूसरों की कामयाबी पर ऐतराज़ को रिवाज बना लेते हैं ...
खुदकी गलतियों को तो पल भर में नज़रअंदाज़ कर देते हैं !

ज़िन्दगी और कुछ नहीं, बस तज़ुर्बों का सौगात दे जाती है ...
खिली हुई धूप में दो काले बादल, हर हमदर्द की औकात बता जाते हैं !!! ❑

बादल

✍पार्थ अग्रवाल
वरिष्ठ अधिकारी
पी.एस.एस विभाग, दुलियाजान

माँ कहती थी कि आसमान का कोई मज़हब, कोई देश नहीं होता
"तो क्या बादलों का कोई घर नहीं होता?" सोचता मैं
बेचारे दिन भर भटकते रहते, कहीं तो थक कर रुकते होंगे
रोकने की कोशिश भी बहुत करता था मैं
नजाने कितनी शामें इनके पीछे दौड़ते भागते बिताईं
कि रोक लूं इन्हें थोड़ा आराम तो मिले
कि सुनूं इनकी कहानी एक शाम तो मिले |

और अब वही शामें अपने दिन को भुलाने में बिताया करता हूं
आसमान की तरफ देख हर रोज अपनी कहानी दोहराया करता हूं
लिख तो देता मैं इन बादलों पर भी अपनी कहानी
पर उसके भार ने खुद उसे ही रुला दिया, उसने भी अपनी कहां मानी? ❑

मैं एक औरत हूँ

✍डॉ. नवनीत स्वरगिरी
मुख्य चिकित्सा अधिकारी (दंत चिकित्सा)
चिकित्सा विभाग, दुलियाजान

अगर बेटी हूं, तो बहू भी
अगर बहू हूं, तो सास भी
अगर सास हूं, तो माँ भी
अगर माँ हूं, तो दादी भी
सब कुछ हूं, एक सशक्त स्त्री हूं।
फिर न जाने क्यों मैं तुम्हें दहेज की अग्नि में झुलसाती हूं?
फिर न जाने क्यों मैं तुम्हें वापस दहलीज पार कराती हूं?
महिला हूं, ममता हूं ,सहेज सकती हूं।
सब रंगों की लड़ी हूं।
है मेरा वादा तुमसे
हर एक फूल को माला में सप्रेम गूंथकर रखूंगी।
आँसू भी देखोगे तो होंगे खुशी के
मुस्कुराहट बनकर सभी के होंठों से छलकूंगी। ❑

एक सैनिक का परिवार

✍रितु कुमारी
कनिष्ठ सहायक
योजना विभाग, नोएडा

एक सैनिक से कम नहीं होता एक सैनिक का परिवार
हालातों और जज्बातों को सहता है वह हर पल वार
माँ पिता के बेबस चेहरे, पत्नी के वो सूखे आंसू
कुछ शाम बिताने को रहते हैं जो बच्चे भूखे।

रास्ता देखे बहन के नैना, सूनी रहती है हर राखी
और भारत के वीर सपूत, जब से तूने पहनी खाकी
हृदय कंपाने आने वाली चिट्ठी आई एक दिन गांव में
महाकाल की तपिश जला डालती थी छांव में।

शांत हुआ वो शेर देश का, चंचल नदी-सा जो बहता था
माँ को याद आई वो बात, पहले जो वो कहता था
इंच भी पीछे न हटूंगा, सीने पर गोली खाऊंगा
अपने देश की मिट्टी पर, शहादत अपनी लिख जाऊंगा।

पत्नी जब आने को बोले, छुट्टी के सपने दिखा देता
बच्चों से बातें करके, फोन पर चॉकलेट खिला देता
माँ कहती बेटा रुक जा, उस माँ ने बुलाया है कहता था
ऊपर हंसता चेहरा अंदर जाने क्या-क्या सहता था।

तू दूर बहुत था हमसे लेकिन, दिल पास तुझको पाता था
तेरे हिस्से का खाना भी रोज-रोज बन जाता था
नाम रोशन किया आपका, सुनने को मैं आतुर था
भावुक हो बोले पिता, मैं कैसा निष्ठुर था।

काल के ये हैं थपेड़े, वक्त का कैसा यह तक़ाज़ा
असहनीय है कांधे पिता के, उसके बेटे का जनाजा
बच्चे माँ का आंचल पकड़े सिसक रहे थे आड़ में
आंखें मिला न पाई वो जो रखती हर पल लाड़ में

पापा मेरे गए कहां माँ, बच्चे पूछे जाते थे
उत्तर क्या देती वो उनको शब्द नहीं मिल पाते थे
अंदर आग सुलगती थी बाहर शांत शीतल काया
उसने जब आवाज उठाई गांव में सन्नाटा छाया

कुर्बानी कुमकुम कंगन की, व्यर्थ ना मेरे जाएंगे
मेरे बच्चे भी भारत की, सेना में अब आएंगे
कहती है भारत की नारी, दुश्मन कर ले गौर
मेरी वेदना को सुनते हैं धरती, वायु, अग्नि, सौर
इन सारे बलिदानों का खत्म ना होने दूंगी दौर
कारगिल के बदले जब तक छीन न लूंगी मैं लाहौर।। ❑

मिर्ची

✍माधुरी किशोर
आश्रित : डॉ. मनीष कुमार
उप महाप्रबंधक, तैलाशय एवं उपसतह प्रबंधक
पूर्वी परिसंपत्ति, दुलियाजान

हाय हाय मिर्ची उफ़ उफ़ मिर्ची
कोई खाए ना मिर्ची
जीभ जलाए यह मिर्ची
मन को भाए ना मिर्ची
मुंह से निकाल दे सब मिर्ची
पेट खराब करें यह मिर्ची
खूब पानी पिलाए यह मिर्ची
आंखों से पानी निकाले यह मिर्ची
स्वास्थ्य बनाए ना मिर्ची
कोई बनना चाहे ना मिर्ची
बहुत तीखी यह मिर्ची
हाय हाय मिर्ची उफ़ उफ़ मिर्ची ❑

पेट्रोलियम राजभाषा शील्ड के अंतर्गत ऑयल इंडिया लिमिटेड को वर्ष 2019-20 के लिए प्रथम पुरस्कार और वर्ष 2021-22 के लिए द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने हेतु पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय द्वारा ऑयल इंडिया लिमिटेड को पेट्रोलियम राजभाषा शील्ड के अंतर्गत वर्ष 2019-20 के लिए प्रथम पुरस्कार और वर्ष 2021-22 के लिए द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इस पुरस्कार को श्री हरदीप सिंह पुरी, माननीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री के कर कमलों से श्री रामेश्वर तेली, माननीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस राज्य मंत्री की उपस्थिति में डॉ. रंजीत रथ, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, ऑयल इंडिया लिमिटेड ने अन्य वरिष्ठ अधिकारियों – डॉ. अंकुर बरूआ, मुख्य महाप्रबंधक (कार्मिक) और डॉ. आर. झा, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) के साथ प्राप्त किया।

नराकास (दुलियाजान) को क्षेत्रीय राजभाषा शील्ड से सम्मानित किया गया

ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान की अध्यक्षता में कार्यरत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), दुलियाजान को भुवनेश्वर, ओड़िशा में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित पूर्व एवं पूर्वोत्तर के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन-2022 के दौरान वर्ष 2021-22 के लिए अपने कार्य-क्षेत्र में संघ की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उक्त कार्यक्रम में श्री अजय कुमार मिश्रा, माननीय गृह राज्य मंत्री, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, श्री भर्तृहरि महताब, उपाध्यक्ष, संसदीय राजभाषा समिति एवं श्रीमती मीनाक्षी जोली, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के अतिरिक्त अन्य विशिष्ट व्यक्तिगण उपस्थित थे। नराकास (दुलियाजान) की ओर से श्री अरुणज्योति बरूआ, मुख्य महाप्रबंधक (प्रशासन) एवं श्री दिगंत डेका, सदस्य-सचिव एवं अधिकारी (राजभाषा) ने उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों के कर-कमलों से राजभाषा शील्ड तथा प्रशस्ति-पत्र ग्रहण किया।

संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप-समिति द्वारा ऑयल इंडिया लिमिटेड के क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान एवं पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी का निरीक्षण

दिनांक 20-21 सितम्बर, 2022 को संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति द्वारा ऑयल इंडिया लिमिटेड के क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान और पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी कार्यालय का निरीक्षण किया गया। सम्पूर्ण निरीक्षण दौरे का समन्वय कार्य ऑयल के पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी द्वारा उत्कृष्ट और सुचारू ढंग से सम्पन्न किया गया।

निरीक्षण के दौरान ऑयल इंडिया लिमिटेड के क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान और पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी में हो रही राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति के संबंध में उप समिति के कार्यकारी अध्यक्ष एवं संयोजक माननीय श्री रामचन्द्र जांगड़ा तथा उपस्थित अन्य माननीय सदस्यों - श्री श्रीरंग आप्पा बारणे, श्री श्याम सिंह यादव, श्री ईरण्ण कड़ाड़ी और श्री सुजीत कुमार ने ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा की। संसदीय राजभाषा समिति की ओर से श्री धर्मराज खटीक, श्री सहदेव सिंह और श्री मुकेश कुमार भी सम्मेलन कक्ष में उपस्थित थे। ऑयल इंडिया लिमिटेड का प्रतिनिधित्व श्री अशोक दास, निदेशक (मानव संसाधन) द्वारा किया गया तथा बैठक में क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान की ओर से श्री प्रशांत बोरकाकोती, आवासी मुख्य कार्यपालक, श्री अरुणज्योति बरूआ, मुख्य महाप्रबंधक (प्रशासन) और श्री दिगंत डेका, राजभाषा अधिकारी उपस्थित थे। ऑयल, पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी की ओर से श्री अभिजीत बरगोहांई, मुख्य महाप्रबंधक (पाइपलाइन सेवाएँ), श्री माधुर्ज्य बरूआ, मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन), श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने प्रतिनिधित्व किया। साथ ही निगमित कार्यालय नोएडा से डॉ. आर. झा, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) और कोलकाता कार्यालय से डॉ. वी. एम. बरेजा, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) शामिल हुए। निरीक्षण प्रक्रिया प्रारम्भ करने से पहले संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति के कार्यकारी अध्यक्ष सहित सभी सदस्यों द्वारा ऑयल इंडिया की ओर से इस अवसर पर लगाई गई विशेष राजभाषा प्रदर्शनी का अवलोकन किया गया तथा ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार हेतु किए जा रहे प्रयासों की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई तथा भविष्य में ऐसे प्रयासों को जारी रखने की इच्छा अभिव्यक्त की गई।

ऑयल, दुलियाजान में हास्य कवि सम्मेलन का सफल आयोजन

ऑयल इंडिया लिमिटेड के राजभाषा अनुभाग, जन संपर्क विभाग के सौजन्य से दुलियाजान क्लब प्रेक्षागृह में दिनांक 03 दिसंबर, 2022 (शनिवार) को ऑयल-कार्मिकों एवं उनके आश्रितों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (दुलियाजान) के सदस्य कार्यालयों, दुलियाजान के आस-पास स्थित अन्य नराकास अध्यक्ष कार्यालयों तथा अन्य

विशिष्ट गणमान्य व्यक्तियों के लिए एक 'अखिल भारतीय हास्य कवि सम्मेलन' का आयोजन किया गया। कवि श्री रोहित शर्मा द्वारा संचालित इस हास्य कवि सम्मेलन में देश-विदेशों में ख्याति अर्जित करने वाले प्रख्यात हास्य कवि पद्मश्री सुरेन्द्र शर्मा के अलावा जाने माने हास्य कवि श्री प्रताप फ़ौजदार, डॉ. दिनेश बावरा, श्री रोहित शर्मा तथा असम के सुप्रसिद्ध कवि श्री नीलिम कुमार और हास्य व्यंग्य के मशहूर अभिनेता श्री अंशुमान भूयां को आमंत्रित किया गया था। दर्शकों से भरे दुलियाजान क्लब के सभागार में कार्यक्रम की शुरुआत ऑयल के मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधान एवं प्रशासन) श्री पलाश गोगोई के उद्घाटन भाषण से हुई। उक्त कार्यक्रम में ऑयल के आवासी मुख्य कार्यपालक श्री प्रशांत बोरकाकोती सहित ऑयल के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण, कर्मचारीगण तथा उनके आश्रित उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त, नराकास के सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधिगण, दुलियाजान के आस-पास स्थित विभिन्न संस्थानों के लोगों तथा आम नागरिक उक्त हास्य कवि सम्मेलन में उपस्थित थे।

मंच संचालन की बागडोर संभालते ही कवि रोहित शर्मा ने आम जिंदगी के ऊपर कटाक्ष करते हुए लोगों को लोटपोट कर दिया। हॉल तालियों व हँसी के फव्वारों से सराबोर हो गया। सबसे पहले नीलिम कुमार को कविता प्रस्तुत करने के लिए आंमत्रित किया गया। इस दौरान नीलिम कुमार ने अपनी मशहूर हिंदी कविता 'नमक' का पाठ कर उपस्थित सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इसके बाद बेहरबाड़ी आउटपोस्ट धारावाहिक के विख्यात हास्य अभिनेता अंशुमान भूयां ने अपनी हास्य-व्यंग्य बातों से सभी दर्शकों को गुदगुदाया। जब डॉ. दिनेश बावरा की बारी आयी तो उन्होंने सामान्य मानव जीवन के छोटे-छोटे किस्सों को कविता द्वारा उजागर कर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रताप फ़ौजदार ने अपने व्यंग्यों से दर्शकों को हंसा-हंसा कर लोटपोट कर दिया। पद्मश्री सुरेन्द्र शर्मा ने आम जीवन में होने वाले किस्सों को हास्य व्यंग्यों के माध्यम से सभी को बांधे रखा। उन्होंने पुरुष एवं नारी के बीच के संबंधों को मजाकिया ढंग से प्रस्तुत कर सभी को हंसाया।

उप महाप्रबंधक (राजभाषा) डॉ. विजय मोहन बरेजा के कुशल संचालन में आयोजित यह कार्यक्रम लगभग तीन घंटों तक चला, जहां सभी दर्शकों ने अंत तक उपस्थित रहकर हास्य व्यंग्य से भरा एक शाम बिताया। आज के इस भागदौड़ एवं तनाव भरे जीवन से मुक्त कर उन्हें हंसी, खुशी के कुछ पल प्रदान कर उनकी कार्यक्षमता एवं उत्पादकता में वृद्धि करने के उद्देश्य से अनेक सरकारी एवं निजी संस्थाओं और कंपनीयों द्वारा हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा इससे पहले भी समय-समय पर अखिल भारतीय हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन ऑयल के विभिन्न कार्य-क्षेत्रों में किया जाता रहा है। राजभाषा हिंदी के साथ-साथ स्थानीय भाषा के प्रसार-प्रचार के उद्देश्य से लाभदायी सरकारी संस्थानों द्वारा ऐसे आयोजन की अपेक्षाएं संसदीय राजभाषा समिति की भी रहती है।

हास्य कवि
03 दिसंबर 2
(शनिवार)

हास्य कवि सम्मेल
(शनिवार)

हास्य कवि सम्मेलन
Oil India Limited

ऑयल की अध्यक्षता में नराकास, दुलियाजान की 42वीं बैठक संपन्न

ऑयल इंडिया लिमिटेड, दुलियाजान की अध्यक्षता में दिनांक 28 अक्टूबर, 2022 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), दुलियाजान की 42वीं बैठक संपन्न हुई। ऑयल के महाप्रबंधक (जन संपर्क) श्री देवाशीष बोरा की अध्यक्षता में आयोजित उक्त बैठक में श्री बदरी यादव, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वोत्तर), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, श्री दिगंत डेका, अधिकारी (राजभाषा) एवं सदस्य सचिव (नराकास-दुलियाजान) उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त दुलियाजान और उसके निकटवर्ती क्षेत्रों में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों और बैंकों के विभागाध्यक्षों एवं राजभाषा अधिकारियों/प्रभारियों ने बैठक में उपस्थित रहकर अपनी सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की।

नराकास, दुलियाजान के सदस्य सचिव श्री दिगंत डेका, अधिकारी (राजभाषा) ने कुशलतापूर्वक बैठक का संचालन करने के साथ ही सदस्य कार्यालयों से प्राप्त तिमाही प्रगति रिपोर्टों के आधार पर बनाई गई स्लाईड का प्रस्तुतीकरण किया। उक्त बैठक के दौरान राजभाषा के कार्यान्वयन में आने वाली कठिनाइयों पर चर्चा की गयी तथा उनके समाधान हेतु आवश्यक निर्णय लिए गए। राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित श्री बदरी यादव, उप निदेशक (कार्यान्वयन) ने सभी कार्यालयों से प्राप्त रिपोर्टों की समीक्षा की और उचित कार्रवाई हेतु सभी कार्यालयों को आवश्यक निर्देश दिए।

सदस्य सचिव ने बैठक में प्रस्ताव रखा कि आगामी वित्त वर्ष 2022-23 में ऑयल राजभाषा पुरस्कार योजना के तहत प्रदत्त 'ऑयल नराकास राजभाषा शील्ड' को सदस्य कार्यालयों के बीच दो श्रेणियों (केन्द्र सरकार के कार्यालय/उपक्रम और बैंक) में वितरण किया जाए।

प्रत्येक श्रेणी के लिए तीन-तीन अलग पुरस्कार (कुल 6 पुरस्कार) दिए जाएं। पुरस्कारों की संख्या में बढ़ोत्तरी से सदस्य कार्यालयों में उत्साह बढ़ेगा, फलस्वरूप राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन तथा प्रचार-प्रसार पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। बैठक में उपस्थित सभी ने इस पर अपनी सहमति व्यक्त की।

श्री देवाशीष बोरा, महाप्रबंधक (जन संपर्क), ऑयल ने अपने वक्तव्य में कहा कि ऑयल की अध्यक्षता में नराकास, दुलियाजान की बैठक हमेशा समय पर आयोजित की जा रही है। उक्त बैठक में सदस्य कार्यालयों से अधिक संख्या में प्रतिनिधि उपस्थित होने पर उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु अपने कार्यालयों में अधिक से अधिक काम हिन्दी में करने के लिए प्रेरित करें। श्री दिगंत डेका, सदस्य सचिव व अधिकारी (राजभाषा), ऑयल के औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही नराकास, दुलियाजान की 42वीं बैठक समाप्त हुई।

ऑयल के क्षेत्र मुख्यालय दुलियाजान में राजभाषा उत्सव- 2022 का आयोजन

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की नीतियों एवं निर्देशों का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित करते हुए ऑयल इंडिया लिमिटेड के क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान में सितंबर महीने में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ राजभाषा उत्सव-2022 मनाया गया। राजभाषा उत्सव के दौरान क्षेत्र सम्मेलन कक्ष, जनरल ऑफिस में एक औपचारिक उद्घाटन कार्यक्रम-सह श्रुतलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। श्री अरुणज्योति बरूआ, मुख्य महाप्रबंधक (प्रशासन) ने राजाभाषा उत्सव का उद्घाटन किया। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में सभी से आग्रह किया कि राजभाषा के विकास के लिए सिर्फ राजभाषा उत्सव मनाने में ही सीमित नहीं रहना है, इसके लिए दैनन्दिन कार्यों में राजभाषा हिन्दी को शामिल करना होगा। उक्त कार्यक्रम में श्री देवाशीष बोरा, महाप्रबंधक (जन संपर्क), ऑयल सहित क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान के विभिन्न विभागों के अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

उद्घाटन कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्री दिगंत डेका, अधिकारी (राजभाषा) ने समारोह में उपस्थित सभी लोगों का स्वागत करते हुए राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशानिर्देशों तथा राजभाषा उत्सव के आयोजन के उद्देश्य पर संक्षिप्त में प्रकाश डाला। राजभाषा उत्सव-2022 के दौरान आयोजित होने वाले विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए उन्होंने सभी से अनुरोध किया। सभी कार्मिकों से यह भी आग्रह किया कि वे अपने आश्रितों को भी प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के लिए प्रेरित करें।

राजभाषा उत्सव के दौरान विभिन्न अधिकारियों, कर्मचारियों तथा उनके आश्रितों के लिए अलग-अलग वर्गों में अनेक रचनात्मक प्रतियोगिताओं यथा:- श्रुतलेख, क्वीज, हिन्दी टिप्पण/आलेखन एवं अनुवाद, कविता पाठ, हिंदी स्लोगन लेखन, हिंदी निबंध लेखन का आयोजन किया गया।

इसके अलावा विभिन्न स्कूलों में स्कूली बच्चों के बीच पोस्टर / चित्रांकन प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। पोस्टर / चित्रांकन प्रतियोगिताओं में बच्चों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह

दिनांक 27.10.2022 (बृहस्पतिवार) को क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान के एमटीडीसी सभागार, मानव संसाधन-ज्ञानार्जन विभाग में राजभाषा उत्सव - 2022 के पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। श्री प्रशांत बोरकाकोती, आवासी मुख्य कार्यपालक, ऑयल की अध्यक्षता में आयोजित उक्त समारोह में श्री बदरी यादव, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वोत्तर क्षेत्र), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, गुवाहाटी मुख्य अतिथि के रूप उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त, श्री अरुणज्योति बरूआ, मुख्य महाप्रबंधक (प्रशासन), श्री देवाशीष बोरा, महाप्रबंधक (जन संपर्क), नराकास (दुलियाजान) के सदस्य-कार्यालयों के कार्मिक और ऑयल के वरिष्ठ अधिकारी तथा कर्मचारीगण कार्यक्रम में उपस्थित थे।

समारोह में उपस्थित लोगों का स्वागत करते हुए श्री दिगंत डेका, अधिकारी (राजभाषा) ने ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के लिए किये जाने वाले कार्यों की विस्तृत जानकारी दी।

मुख्य अतिथि के रूप में पधारे श्री बदरी यादव ने अपने संबोधन में ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में किए

जा रहे कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि भाषा ही एक ऐसा माध्यम है जिसके जरिए हम अपने विचारों को आसानी से अभिव्यक्त कर सकते हैं। आज विश्व में हिंदी का बोलबाला है, हिंदी धीरे-धीरे समग्र विश्व में अपना परचम लहराने में कामयाब हो रही है। इसके अलावा उन्होंने राजभाषा विभाग द्वारा जारी विभिन्न दिशानिर्देशों के बारे में उपस्थित सभी को अवगत कराया।

सभा को संबोधित करते हुए अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री प्रशांत बोरकाकोती, आवासी मुख्य कार्यपालक, ऑयल ने सबसे पहले पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी। उसके बाद अपने विचारों को रखते हुए कहा कि सभी को भाषा सीखने के लिए भरपूर प्रयास करना चाहिए। जब और जहां भी अवसर मिले अपनी मातृभाषा के अलावा दूसरी भाषाओं को भी सीखने की कोशिश करनी चाहिए। कोई भी सीखी हुई भाषा, जीवन के किसी मोड़ पर सहायता कर सकता है, उन्होंने कहा कि संघ की राजभाषा हिंदी पर हमें गर्व होना चाहिए और जितना हो सके अपना कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने कार्यालयों में वार्षिक लक्ष्यों को पूरा करने हेतु राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन पर जोर दिया तथा दूसरों को भी काम करने के लिए प्रेरित करने का आह्वान किया।

कार्यक्रम के अंत में ऑयल के प्रतिष्ठित अंतर-क्षेत्रीय राजभाषा शील्ड एवं अंतर-विभागीय राजभाषा शील्ड के विजेता कार्यालयों/विभागों को राजभाषा शील्ड एवं प्रशस्ति-पत्र से सम्मानित किया गया। इसके अलावा नराकास दुलियाजान के विजेता सदस्य कार्यालयों को भी ऑयल नराकास राजभाषा शील्ड एवं प्रशस्ति-पत्र से सम्मानित किया गया।

इसके अतिरिक्त, उक्त कार्यक्रम में राजभाषा उत्सव के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागी अधिकारी, कर्मचारी तथा उनके आश्रितों के बीच प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया। श्री देवाशीष बोरा, महाप्रबंधक- जन संपर्क, (विभागाध्यक्ष), ऑयल के धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही संचालक श्री दिगंत डेका, अधिकारी (राजभाषा) द्वारा कार्यक्रम के औपचारिक समापन की घोषणा की गई।

राजभाषा उत्सव 2022
समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह
Concluding & Prize Distribution Ceremony
Oil India Limited

राजभाषा पुरस्कार अर्पण समारोह, 2022

ऑयल इंडिया लिमिटेड के निगमित कार्यालय, नोएडा में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन 14 सितंबर से 29 सितंबर 2022 तक किया गया। इस दौरान अनेक रचनात्मक प्रतियोगिताएं यथा:- हिन्दी भाषा ज्ञान, हिन्दी आशु भाषण और हिन्दी साहित्य पाठ प्रतियोगिता (सभी दो श्रेणियों में, हिन्दी एवं हिन्दीतर भाषी हेतु) का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में कार्यालय के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण ने काफी संख्या में भाग लिया। हिन्दी पखवाड़ा समापन एवं पुरस्काार अर्पण समारोह का आयोजन दिनांक 22 नवम्बर 2022 को किया गया। इस अवसर पर अपने स्वागत वक्तव्य में डॉ. आर. झा, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने कहा कि भारत की सभ्यता और भाषायी संस्कृति की जड़ें गहरी हैं और ये विविध संस्कृतियों के सम्मिश्रण से गुजरकर सदियों से विकसित हुई हैं। भाषायी विविधता एवं बहुआयामी संस्कृति के बावजूद राजभाषा हिन्दी ने देश के स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आज तक पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोकर अनेकता में एकता की धारणा को पुष्ट किया है। हिन्दी हमारे देश की राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का सबसे शक्तिशाली एवं प्रभावी माध्यम है। विश्व के सभी प्रमुख विकसित एवं विकासशील देश अपनी-अपनी भाषाओं में ही अपना सरकारी कामकाज करके उन्नत हुए हैं। हिन्दी हमारे देश की सबसे बड़ी संपर्क भाषा है। यह देश के अधिकांश लोगों द्वारा पारस्परिक व्यवहार में प्रयुक्त की जाती है। हिन्दी के इसी महत्व को देखते हुए भारतीय संविधान में इसे संघ सरकार की राजभाषा का दर्जा दिया गया है। देश और समाज के व्यापक हित में राजभाषा हिन्दी के प्रति जनता और सरकारी तंत्र दोनों को अधिक से अधिक संवेदनशील और सक्रिय बनाए जाने की आवश्यकता है।

किसी भी भाषा का विकास उसके साहित्य पर निर्भर करता है। इसके लिए जरूरी है कि हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में उच्च कोटि के साहित्य का सृजन किया जाए। तकनीकी विषयों की पुस्तकों को भी सरल एवं सुगम भाषा में उपलब्ध कराना होगा तथा अंग्रेजी में प्रचलित इन पुस्तकों का हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं में अनुवाद कराना होगा। इस दिशा में हमारे विश्वविद्यालय और संस्थान अहम भूमिका निभा रहे हैं।

भारत सरकार द्वारा हिन्दी को विश्व-भाषा के रूप में स्थापित करने का प्रयास भी किया जा रहा है। वर्धा में महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय तथा मॉरीशस में विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना

ऐसे ही कुछ प्रयास हैं। विदेशों में बसे भारतीय मूल के प्रवासियों द्वारा भी हिन्दी को विश्व भाषा बनाने की दिशा में सहयोग दिया जा रहा है। हम सभी का यह प्रयास होना चाहिए कि हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र की मान्य भाषा के रूप में दर्जा जल्दी प्राप्त हो। अंत में, उन्होंने सभी पुरस्कार विजेताओं को उनकी उपलब्धियों के लिए बधाई दी और यह उम्मीद जताई कि ये पुरस्कार उन्हें हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित श्री अशोक दास, निदेशक (मानव संसाधन) ने अपनी ओर से उन सभी प्रतिभागियों को हार्दिक धन्यवाद दिया कि उन सभी ने पूरी सक्रियता से सभी प्रतियोगिताओं में भाग लिया साथ ही उन्होंने उन सभी पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं को भी हार्दिक बधाई दी। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि अब समय आ गया है कि सभी कार्यों को अपनी भारतीय भाषाओं और हिन्दी में किया जाए। यह तर्क अब निर्मूल हो चुका है कि अपनी भाषाओं में काम करके आप विकसित और विकासशील विश्व में पिछड़ जायेंगे। क्योंकि अनेक विकसित देश केवल अपनी भाषा में ही काम करके ही विश्व में अग्रणी बने हैं। ऐसा होता तो चीन, जापान, रूस, फ्रांस, जर्मनी, इटली आदि देश आज विश्व में विकास की दौड़ में पिछड़े होते। भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं बल्कि जनता और सरकारी तंत्रों के बीच पारदर्शिता लाने का जरिया भी हो। इसलिए हम सभी को अपना अधिकाधिक कार्य मूल रूप में अपनी भाषा में ही करना चाहिए।

अंत में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। धन्यवाद ज्ञापन और कार्यक्रम का संचालन डॉ. आर. झा, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने किया।

पुरस्कार अर्पण समारोह, 2022
Arpan Samaroh, 2022

पुरस्कार अर्पण समारोह, 2022
Puraskar Arpan Samaroh, 2022

पाइपलाइन मुख्यालय में राजभाषा उत्सव-2022 का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह सफलतापूर्वक संपन्न

दिनांक 21.10.2022 को ऑयल इंडिया लिमिटेड,पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी में आयोजित राजभाषा उत्सव-2022 के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। अभिजीत बरगोहांई, मुख्य महाप्रबंधक(पाइपलाइन सेवाएं) की अध्यक्षता में आयोजित उक्त कार्यक्रम में श्री बदरी यादव, उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग मुख्य अतिथि के रूप में विराजमान थे। इसके अलावा माधुर्ज्य बरुआ, मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) एवं पाइपलाइन मुख्यालय के सभी विभागाध्यक्ष तथा अन्य अधिकारी/कर्मचारी भी उपस्थित थे। माधुर्ज्य बरुआ एवं हरेकृष्ण बर्मन ने समारोह में उपस्थित लोगों का स्वागत किया तथा ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के लिए किये जाने वाले कार्यों की विस्तृत जानकारी प्रदान की। अभिजीत बरगोहांई, मुख्य महाप्रबंधक (पाला सेवाएं) ने अपने भाषण में कहा कि भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार दैनंदिन काम- काज में राजभाषा के प्रयोग हेतु कई कदम उठाए गए हैं। एक सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठान होने के नाते इस नीति के आधार पर कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक हिन्दी का प्रयोग सुनिश्चित किया जा रहा है। उन्होंने उपस्थित सभी से यह आग्रह किया है कि यथासंभव अपना कार्यालयीन काम हिंदी में करें। मुख्य अतिथि के रूप में पधारे श्री बदरी यादव, उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, गुवाहाटी ने अपने संबोधन में कहा कि भाषा ही ऐसा माध्यम है जिसके जरिए हम अपने विचारों को शाब्दिक रूप में दूसरों तक आसानी से पहुंचा सकते हैं। जब भी मौका मिले भाषा सीखने की कोशिश करनी चाहिए। इसके अलावा उन्होंने राजभाषा विभाग द्वारा जारी विभिन्न दिशानिर्देशों के बारे में उपस्थित सभी को अवगत कराया। उक्त कार्यक्रम के दौरान राजभाषा उत्सव-2022 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया। कृष्णा हजारिका राव, उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही संचालक हरेकृष्ण बर्मन द्वारा कार्यक्रम के औपचारिक समापन की घोषणा की गई।

कोलकाता कार्यालय में राजभाषा उत्सव 2022 के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन

ऑयल इंडिया लिमिटेड के कोलकाता कार्यालय में दिनांक 01.09.2022 से 30.09.2022 तक राजभाषा उत्सव 2022 का आयोजन किया गया। इसके दौरान कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए विशेष रूप से नई प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं-तत्क्षण आशुभाषण प्रतियोगिता, कार्यालयीन हिन्दी ज्ञान प्रतियोगिता, हिंदी कहानी लेखन प्रतियोगिता, हिंदी हास्य कविता प्रतियोगिता तथा हिन्दी क्विज़ प्रतियोगिता में कार्मिकों ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। राजभाषा उत्सव का उद्घाटन एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला के आयोजन के साथ हुआ। दिनांक 03.09.2022 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में 14 अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में विशेष रूप से श्री निर्मल कुमार दुबे, सहायक निदेशक, हिंदी कार्यान्वयन कार्यालय बतौर संकाय उपस्थित हुए। उनके अनुभव का लाभ सभी उपस्थित अधिकारियों ने उठाया। दिनांक 04.11.2022 को भव्य समापन, सुगम संगीत एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। खचाखच भरे कर्मचारी रिक्रेशन हॉल में कार्मिकों को सम्बोधित करते हुए श्री अरिंदम बरुआ, महाप्रबंधक (कोलकाता कार्यालय) ने सभी उपस्थित विद्वजनों का स्वागत किया तथा सभी कार्मिकों से अपील की कि वे अपना ज्यादा से ज्यादा कार्यालयीन कार्य राजभाषा हिन्दी में करें। उन्होंने यह भी

कहा कि कोलकाता कार्यालय के अधिकांश कार्मिक हिन्दीतर भाषी हैं परंतु उनके द्वारा अपने काम हिन्दी में करने का प्रयास सदैव किया जाता है। उन्होंने यह भी कहा कि कार्यालय के अधिकांश अधिकारी एवं कर्मचारी कार्यालय में प्राप्त होने वाले पत्रों पर हिन्दी में हस्ताक्षर करते हैं तथा उन पर टिप्पणी भी हिन्दी में लिखने का यथासम्भव प्रयास करते हैं। सुगम संगीत कार्यक्रम के दौरान श्री अभिजीत बैनर्जी, श्री शक्ति दास, श्री शुभेन्दु चट्टोपाध्याय, श्री मानवेन्द्र चौधुरी, श्री कुशल मजुमदार, श्री अमिताभ मजुमदार, श्री सौमेन घोष द्वारा गीत प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम के अंत में सभी पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। डॉ॰ वी एम बरेजा, उप महाप्रबंधक (रा. भा.) द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।

केजीबी एवं एमबीपी कार्यालय में हिंदी क्विज़ प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक 17 नवम्बर 2022 को ऑयल इंडिया लिमिटेड के के.जी.बी. एवं एम बी पी काकीनाडा कार्यालय में हिंदी दिवस मनाया गया तथा इस अवसर पर राजभाषा हिंदी की प्रगति एवं प्रसार के लिए अनेक प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। मुख्य रूप से कार्यालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने हिंदी क्विज़ प्रतियोगिता का भरपूर आनंद उठाया। इस प्रतियोगिता के प्रारम्भ में श्री बी एस राव, मुख्य प्रबंधक (प्रशासन) ने स्वागत सम्बोधन प्रस्तुत किया तथा कार्यपालक निदेशक (केजीबी एवं एमबीपी) श्री अनफर अली हक ने उपस्थित कार्मिकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि कार्यालय में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन का माहौल बन चुका है। कार्मिक अब अपना काम हिंदी में करने का प्रयास करने लगे हैं। केंद्र सरकार की राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन की जो नीति बनी हुई है उसके अनुसार लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए गम्भीरता से प्रयास किए जा रहे हैं। हालांकि कार्यालय की कार्य प्रकृति तकनीकी है परंतु कार्मिकों द्वारा यथासम्भव कार्य हिंदी में किया जाना प्रशंसनीय है। उन्होंने इच्छा जाहिर की कि इस उत्साह को बनाए रखा जाए। आगे बोलते हुए उन्होंने कहा कि हिन्दी दिवस के अवसर पर हिंदी क्विज़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। उन्होंने अपनी प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा कि इस प्रतियोगिता में छः टीमें भाग ले रही हैं। उन्होंने अपनी ओर से सभी को शुभकामनाएं दी तथा आशा प्रकट की कि वे सभी इसी प्रकार सभी की प्रिय भाषा हिंदी को आगे बढ़ाने का प्रयास करते रहेंगे।

डॉ. वी एम बरेजा, उप महाप्रबंधक (रा.भा.) ने क्विज़ मास्टर की भूमिका का निर्वहन किया। प्रतियोगिता के अंत में पुरस्कार विजेता टीमों के लिए पुरस्कारों की घोषणा की गई तथा ईनामी राशि का भुगतान ई-भुगतान के माध्यम से कर दिया गया। श्री बी एस राव द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। हिन्दी क्विज प्रतियोगिता के कड़े मुकाबले के परिणाम निम्नानुसार रहे :-

प्रथम पुरस्कार	: टीम गोदावरी
	श्री संजय खत्री, श्री सिद्धार्थ सत्तीराजू
द्वितीय पुरस्कार	: टीम नागावली
	श्री एम वी वी एस मूर्ति, श्री एस के बिस्वास
तृतीय पुरस्कार	: टीम कृष्णा
	श्री के सी बेहरा, श्री आर एम जोशी

ऑयल में हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान द्वारा हर वर्ष अपने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में काम करने के लिए सक्षम बनाने हेतु ऑयल इंडिया हायर सेकेंडरी स्कूल में हिंदी प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ एवं पारंगत परीक्षा के लिए कक्षा का आयोजन किया जाता है। इस कक्षा में ऑयल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ-साथ नराकास, दुलियाजान के सदस्य कार्यालयों से भी अधिकारी/कर्मचारीगण भाग लेते हैं।

हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा आयोजित हिंदी प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ एवं पारंगत परीक्षा नवंबर 2022 सत्र में ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दुलियाजान के सदस्य कार्यालयों से 49 परीक्षार्थियों का नामांकन किया गया और सभी ने परीक्षा में भाग लिया। उल्लेखनीय है कि हिंदी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में उर्तीण परिक्षार्थियों को 'ऑयल प्रोत्साहन पुरस्कार योजना' के तहत हर वर्ष एक मुस्त नकद राशि प्रदान की जाती है। इसके अतिरिक्त, पाठ्यक्रम के लिए चलाए जाने वाले प्रशिक्षण कक्षाओं में उपस्थिति के आधार पर प्रशिक्षार्थियों को नकद प्रोत्साहन राशि प्रदान करने का भी प्रावधान है।

पाइपलाइन मुख्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन

ऑयल इंडिया लिमिटेड, पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी द्वारा दिनांक 30 सितंबर, 2022 को एक राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। उक्त कार्यशाला में श्री अभिजीत बरगोहांई, मुख्य महाप्रबंधक (पाला सेवाएं), श्री माधुर्ज्य बरूआ, मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) के साथ-साथ ऑयल के वरिष्ठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। कार्यशाला में श्री अभिजीत बरगोहांई, मुख्य महाप्रबंधक (पाला सेवाएं) ने उपस्थित सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि सभी कार्मिक कार्यालय के यथासंभव काम हिंदी में करने की कोशिश करें। अपना हस्ताक्षर हिन्दी में करें। वे अपना काम अपने मोबाइल एवं कंप्यूटर में आसानी से कर सकते हैं। श्री माधुर्ज्य बरूआ, मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) ने कहा कि ऐसी कार्यशाला के द्वारा हमारे दैनन्दिन काम-काज में हिंदी का प्रयोग करते समय आनेवाली कठिनाइयों को दूर करने में मदद मिलती है। हिन्दी सिखना, सिखाना, बोलना और समझना तथा कार्यालय में हिन्दी में काम करना भी राष्ट्र सेवा है। उन्होंने उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से कार्यालय के यथासंभव कार्य हिंदी में करने की अपील की। कार्यशाला की शुरुआत में श्री हरेकृष्ण बर्मन, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया एवं कार्यशाला के उद्देश्य की व्याख्या की। उन्होंने कार्यालय द्वारा किए गए राजभाषा कार्यान्वयन की गतिविधियों के बारे में एवं दिनांक 21 सितंबर, 2022 को हुई संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण के बारे में उपस्थित सभी को अवगत कराया। कार्यशाला के दौरान एक श्रुतलेख प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें पाइपलाइन मुख्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। कुमारी नीलम, वरिष्ठ प्रबंधक (प्रशासन), पाला के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला का सफल समापन हुआ।

और प्राकृतिक गैस मंत्रालय
की
नई दिल्ली